Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

(يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ۚ اِعْدِلُوْا ۟ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۖ وَاتَّقُوا

(अल्-मायदा:9)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह की ख़ातिर मज़बूती से निगरानी करते हुए इन्साफ़ के समर्थन में गवाह बन जाओ। और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें कदापि इस बात पर विवश न करे कि तुम इन्साफ़ न करो। इन्साफ़ करो यह संयम के सबसे ज़्यादा निकट है ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 19

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
500 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

30 रमज़ान 1442 हिज्री कमरी 13 तब्लीग़ 1400 हिज्री शम्सी 13 मई 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तीन महान सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत

(1246) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने फ़रमाया : ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु ने झंडा लिया, वह शहीद हुए। फिर जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे लिया, वह भी शहीद हुए। फिर बदुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे लिया, वह भी शहीद हुए। (आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते जाते थे) और हालत यह थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखों से आँसू बह रहे थे । फिर हज़रत ख़ालिद ऊबन वलीद ने उसे बग़ैर सरदार होने के लिया और उन्हें फ़तह हुई।

हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली अल्लाह शाह रज़ियल्लाहु अन्हु इस हदीस की तशरीह में फ़रमाते हैं कि जंग मौअता की तरफ़ इशारा है जो शाम की सरहद पर हुई। इस जंग में हज़रत ज़ैद बिन हार्सा कमांडर निर्धारित हुए थे जो आज़ाद किए गए ग़ुलाम थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि यदि वह शहीद हो जाएं तो हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु और यह शहीद होजाएं तो हज़रत बदुल्लाह बिन रवाह रज़ियल्लाहु अन्हु कमांडर होंगे। मुस्लमानों की तरफ़ से तीन हज़ार की फ़ौज थी और दुश्मन का लश्कर एक लाख के क़रीब था। ये तीन महान सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद अन्य मैदान-ए-जंग में काम आए। आख़िर हज़रत ख़ालिद बिन बलीद रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर फ़तह हुई। ऊपर वर्णित तीनों सहाबा की शहादत की आँहज़रत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बज़रीया कशफ़ या वह्यी इलम पा कर समय से पूर्व सूचना दी। इन काबिल-ए-क़दर और मुख़लिस साथीयों की जुदाई के ख़्याल पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखों से बे-इख़्तियार आँसू जारी हो गए। (सही बुख़ारी भाग 2 पुस्तक जनायज़, प्रकाशन क़ादियान 2006)

आचरण के ठीक होने के लिए उस तरह की हस्ती पर ईमान लाना आवश्यक है। जो हर हालत और हर समय में उस के कर्मों और आचरणों और उस के हृदय के भेदों पर गवाह है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

"कप्तान डगलस की बुद्धिमत्ता और न्याय

अत: कप्तान डगलस साहिब की बुद्धिमत्ता की तरफ़ ध्यान देना चाहिए कि जब मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी ने मेरे बारे में कहा कि यह बादशाह होने का दावा करते हैं और इश्तिहार उसके सामने पढ़ा गया तो उसने बड़ी बुद्धिमत्ता से पहचाना कि ये सब उन लोगों का झूठ है और हमारे विरोधी की किसी बात पर ध्यान न किया ,क्योंकि इस में शक नहीं कि इज़ाला औहाम इत्यादि दूसरी किताबों में हमारा लक़ब (उपनाम) सुलतान लिखा है,परन्तु यह आसमानी सलतनत की तरफ़ इशारा है और सांसारिक बादशाहों से हमारा कुछ सम्बन्ध नहीं ऐसा ही हमारा नाम हक्म आम भी है। जिसका अनुवाद यदि अंग्रेज़ी में किया जाए तो गवर्नर जनरल होता है और शुरू से ये सब बातें हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों में मौजूद हैं कि आने वाले मसीह के ये नाम हैं। ये सब हमारे ख़िताब किताबों में मौजूद हैं और साथ ही उनकी व्याख्या भी मौजूद है कि ये आसमानी सल्तनतों की इस्तेलाहें हैं और ज़मीनी बादशाहों से उनका सम्बन्ध नहीं है। यदि हम बुराई को चाहने वाले होते तो हम जिहाद इत्यादि से लोगों को क्यों रोकते और दरिंदगी से हम सृष्टि को क्यों मना करते। अत: कप्तान डगलस साहिब अक़्ल से इन सब बातों को पा गया और पूरे-पूरे इन्साफ़ से काम लिया और दोनों पक्षों में से ज़रा भी दूसरे पक्ष की तरफ़ नहीं झुका और ऐसा नमूना इन्साफ़ स्थापित करने और सम्मान पाने का दिखलाया कि हम दिल से इच्छुक हैं कि हमारी गर्वनमेंट के समस्त सम्मान्नीय हुक्काम हमेशा इसी उच्च स्तर के न्याय के नमूना को दिखलाते रहें जो नौ शेरवां के इन्साफ़ को भी अपने कामिल इन्साफ़ के कारण से छोटे स्तर का ठहराता है और यह किस तरह हो सकता है कि कोई इस गर्वनमेंट के अमन वाले ज़माना को बुरा ख़्याल करे और इसके ख़िलाफ़ मन्सूबा षडयन्त्र बनाने की तरफ़ अपना ज़हन ले जाए।

... के ज़माने में मुसलमानों पर अत्याचार

ये हमारे देखने की बातें हैं कि .... के ज़माना में मुसलमानों को कितना कष्ट होता था। केवल एक .. के संयोग से ज़िबह किए जाने पर ... ने छ: सात हज़ार आदमियों को तलवार से मार

शेष पृष्ठ 12 पर

समस्त नाकामियों की जड़ हिम्मत हार देना है

जो व्यक्ति निश्चित रूप से और सुनिश्चित ज्ञान के बग़ैर काम छोड़ देता है हमेशा अपने कार्य में या अपने उद्देश्य में विफल रहता है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत यूसुफ़ आयत 88 يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ की व्याख्या में फ़रमाते हैं

"इस आयत से स्पष्ट प्रकट है कि हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम को हज़रत-ए-यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़िंदा होने और फिर मिस्र में होने की ख़बर ख़ुदा तआला की ओर से हासिल थी अन्यथा सम्भव नहीं एक लड़के के सम्बन्ध में जिसे वे समझते हो कि भेड़ीया खा गया है या और किसी कारण से मर चुका है वह अपने बेटों की तलाश का हुक्म देते और विशेषता मिस्र में तलाश का हुक्म देते।

इस आयत में रुहानी और जिस्मानी तरक़्क़ी का उच्चतम गुण बताया है। समस्त नाकामियों की जड़ हिम्मत हार देना है । जो व्यक्ति निश्चित रूप से और सुनिश्चित ज्ञान के बग़ैर काम तर्क कर देता है हमेशा अपने कार्य में या अपने उद्देश्य में विफल रहता है। मामूली से मामूली कार्यों में भी यह असल काम दे रहा है। एक बड़ा लोहार और एक मामूली लोहार में यही अंतर देखोगे कि एक हर मुश्किल काम के वक़्त कहेगा यह नहीं हो सकता दूसर उसके हल करने पर लगा रहेगा। और आख़िर कामयाब हो जाएगा। कर्यों में ही नहीं क़ुदरत के कर्मों में भी यह असल काम कर रहा है। जो बीमार सेहत की उम्मीद दिल से निकाल देता है उसे सेहत होनी मुश्किल हो जाती है। जो तालिब-इल्म

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-11)

कालेज और यूनीवर्सिटीज़ में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों तथा छात्राओं की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात

एक विद्यार्थी की तरफ से पर्दा की आवशयकता पर निबन्ध का सुनाना,फ़ैमिली और इनफ़रादी मुलाक़ात

वाकफ़ीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर के साथ ख़ुसूसी क्लासिज़

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

30 मई 2015 ई (दिनांक शनिवार)

एक विद्यार्थी ने प्रश्न किया कि यदि कीमोथेरापी को जड़ी बूटियों के साथ मिला के ईलाज किया जाए तो अच्छा ईलाज हो सकता है

माह पारा साहिबा ने कहा कि इस पर उन्होंने कोई रिसर्च नहीं की। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि इस पर आप रिसर्च कर लो

इस विद्यार्थी ने मज़ीद प्रश्न किया : एलोपैथिक ईलाज किस हद तक करना चाहिए, जब कि इस के साइड-इफ़ेक्ट्स भी बहुत ज़्यादा हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जब तक डाक्टर कहता है करते जाओ। विद्यार्थी ने मज़ीद पूछा : कि हुज़ूर डाक्टर तो पैसे कमाने के लिए कहते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यदि यह एहसास हो कि डाक्टर पैसे बनाने के लिए कर रहा है, तो न कराओ। कुछ यूरोपीयन मुल्कों में एशीयन लोगों को लेबारेटरी टैस्ट के लिए रखा हुआ है। जब कुछ समझ न आए तो पैनकिल्लरज़ दे देते हैं। दूसरे ईलाज भी साथ-साथ कर लेने चाहिऐं। एक-बार हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु बीमार थे। उन्होंने पहले देसी दवाई खाई फिर एलोपैथिक फिर होमेयोपैथिक खाई। किसी बे-तकल्लुफ़ मित्र ने कहा कि आपने तीनों खा लीं हैं। हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : यह तो ईलाज है यह ख़ुदा नहीं हैं। मुझे नहीं पिता कि ख़ुदा तआला ने किस में शिफ़ा रखी है इस लिए मैंने तीनों खा लीं हैं।

इस के बाद एक दूसरे विद्यार्थी ने अपना एक मज़मून पढ़ कर सुनाया, जिसका शीर्षक था

Discussion of Head Scarf from the pedgogical point of view अर्थात तालीमी मैदान में हिजाब की बेहस

पिछले दस वर्ष से ज़्यादा समय से जर्मनी में इन मुस्लमान औरतों के सिर के हिजाब पर पाबंदी है जो पब्लिक सर्विसिज़ अर्थात शिक्षा और वकालत इत्यादि से जुड़े हैं। इस के कारण इस्लाम मुख़ालिफ़ सियासतदानों के बयानात दिए थे। तथा बेहस के समय समस्त फ़रीक़ैन की बात नहीं सुनी जाती थी और एक तरफ़ा मुहिम इस्लाम के हुक्म के विरुद्ध चलाई जाती रही। फिर आहिस्ता-आहिस्ता इस बेहस का रुख पल्टा और इस्लाम के विरुद्ध फैलाए जाने वाले नज़रियात को तबदील किया। जनवरी 2015 में जर्मनी में कोर्ट ने, अतिरिक्त टीचरज़ के बाक़ी मुस्लमान औरतों के लिए हिजाब का Ban ख़त्म कर दिया है। इस का बहुत सारे रोशन विचार सियासतदानों ने स्वागत किया और उसे जनतंत्र और बराबरी के अनुसार क़रार दिया।

हुज़ूर अनवर ने इस बच्ची को फ़रमाया कि आपने इतनी तेज़ पढ़ा है कि पता नहीं समझ भी आया है किसी को या नहीं?

एक विद्यार्थी ने प्रश्न किया कि हमें किन विषयों पर अपने Thesis लिखने चाहिऐं जिनमें यूरोपीयन समाज की कमज़ोरियों की निशानदेही हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया असल चीज़ Morals हैं, इसकी Defination विभिन्न है। उदाहरण के लिए यूरोप में यह अख़लाक़ समझा जाता है कि पुरुष और औरत अपनी मर्ज़ी से बिना शादी के सम्बन्ध क़ायम कर लें तो कोई पकड़ नहीं। यदि ज़बरदस्ती का सम्बन्ध हो तो पकड़ लेते हैं । इस्लाम कहता है कि तुम्हारी अख़लाक़ की यह व्याख्या ग़लत है, एक तरीक़ा है प्रत्येक चीज़ का, शादी करो तो सुकून पैदा होगा। शादी के साथ संबंध क़ायम करो। नसल पैदा करो। फिर इस तरह संसद तो Homosexuality के बारे में क़ानून पास कर देती हैं, जबकि इस्लाम और बाइबल ये भी कहती है कि यह ग़लत है और क़ुरआन-ए-करीम में यह लिखा है कि इस कारण से एक क़ौम पर अज़ाब आया था। इस तरह के आप शीर्षक निकाल सकती हैं, आप लोगों के तेज़ ज़हन हैं । बाक़ी रह गया पर्दे का सम्बन्ध तो अभी यहां वर्णन किया था कि मुस्लमान महिलाए कहती हैं कि हिजाब अपने धर्म की इताअत में पहननी है? इस्लाम यह नहीं कहता कि आँखें बंद करके इताअत करो। केवल एक बात पर आँखें बंद कर के ईमान लाना है वह अल्लाह पर ईमान है और ग़ैब पर ईमान है और वह इस लिए कि फिर जब आहिस्ता-आहिस्ता ईमान बढ़ेगा तो अल्लाह तआला फिर अपना प्रकटन भी स्वयं ही करेगा। पर्दे का हुक्म जो आया है यह अपनी पहचान के प्रकटन के लिए आया है, इस से उमूमन जो शुरफ़ा हैं वह हिजाब को देखकर एहतियात करते हैं। इस्लाम ने केवल यह नहीं कहा कि अपना सिर ढांक लो बल्कि उसकी हिक्मत भी बताई कि ताकि तुम ग़ैरों से पहुंचने वाले नुक़्सान से बच सको। इस नुक़्सान से बचने के लिए तुम्हें पुरुष और औरत के मध्य एक बैरियर रखना चाहिए।

एक विद्यार्थी ने कहा : कुछ महिलाए जो टीचर बन रही थीं उन्होंने यह दलील दी थी कि लोग कहते हैं कि मुझे मेरा धर्म कहता है कि क़ुर्बानी करो

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यदि यह कहो कि क़ुर्बानी कर रही हैं तो वह कह देंगे कि तुम से तुम्हारा धर्म क़ुर्बानी मांगता है। पुरुष से क्यों नहीं मांगता। बहुत से लोग तुम से हमदर्दी करेंगे। तुम उनको बताओ कि क्या लाभ है। अल्लाह तआला ने जहां क़ुरआन में पर्दे का हुक्म दिया इस में पहले मर्दों को कहा कि नज़रें नीची रखों। बहुत सी यूरोपीयन महिलाए जो हमारे जलसे पर आती जैसे U.K जलसे पर एक JOURNALIST आई थी। सारा दिन उसने औरतों की मारकी में गुज़ारा। पहले वह कहती थी कि यह segregation किया है? फिर सारा दिन गुज़ार ने के बाद शाम को उसने कहा कि मैं ज़्यादा आज़ादी से रही हूँ। मुझे पता लगा कि मैं मर्दों की नज़रों से बची रही हूँ जो ग़लत नज़रें डालते हैं। मैं अपनी पहचान के साथ रही हूँ। यहां सब महिलाए ही काम कर रही थीं। औरत की एक value है और यह इस्लाम ही इसको बताता है।

इस पर एक विद्यार्थी ने अर्ज़ किया : इस समाज में वह कहते हैं कि आप सारा दिन घर में जो मर्ज़ी पहनो, पर स्कूल में आकर हिजाब न लो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : स्कूल में जो यूनीफार्म है पहन लो परन्तु उनको कहो कि मुझे आदत है कि मैं सिर पर हिजाब पहनती हूँ। कुछ यूरोपीयन बूढ़ी महिलाए अभी भी सिर ढाँपती हैं। सर्दीयों में स्कार्फ के अतिरिक्त गले में मफ़लर भी डाल लेती हैं। उदाहरण के लिए आप एक रिसर्च कर रही हो, तो उस के लिए एक स्पैशल CAP पहननी पड़ती है तो पहन लो, परन्तु जब उस कमरे से बाहर आओ तो फिर उचित कपड़े होना चाहिए। "असल चीज़ है हया" औरत को हया रखनी चाहिए। ताकि वह अपनी इज़्ज़त को महफ़ूज़ रख सके। यहां हया नहीं इस लिए बड़ी percentage शादी से पहले ग़लत कामों में मुबतला हो जाती है। हम केवल क़ुर्बानी नहीं कर रहे। हाँ तुम यह कह सकती हो कि चूँकि मेरा धर्म मुझे ऐसा करने का हुक्म देता है इस लिए मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती कि इस से हट कर अनुकरण करूँ, परन्तु क़ुर्बानी का शब्द ठीक नहीं। यदि तुम क़ुर्बानी का शब्द प्रयोग करोगी तो फिर ग़ैर लोग एतराज़ करेंगे।

एक और विद्यार्थी ने प्रश्न किया : क़ुरआन-ए-करीम में पर्दे की बहुत सी आयात हैं और यह भी कहा जाता है कि سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا यहां

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

उस ज़ात की क़सम जिस के नियंत्रण में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जान है

वास्तव में फ़रिश्ते उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से उसी तरह लज्जा करते हैं जैसे वह फ़रिश्ते अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लज्जा करते हैं (हदीस)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा ‘राशिद दो नूरों वाले हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए यहां तक कि आपकी बग़ल की सफ़ेदी नज़र आने लगी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए दुआ की,

मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को किसी और के हक़ में ऐसी दुआ करते हुए न पहले कभी सुना और न बाद में, और वह दुआ यह थी, اَللّٰھُمَّ أَعْطِ عُثْمَانَ، اَللّٰھُمَّ افْعَلْ بِعُثْمَانَ। हे अल्लाह! उस्मान को बहुत अता फ़र्मा, हे अल्लाह! उस्मान पर अपना फ़ज़ल-ओ-करम नाज़िल फ़र्मा

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद किए ग़ुलाम अबू सईद वर्णन करते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने घर के घेराव के समय बीस ग़ुलाम आज़ाद किए

पाँच मरहूमीन आदरणीय मुहम्मद यूनुस ख़ालिद साहिब मुरब्बी सिलसिला, आदरणीय डाक्टर निज़ामुद्दीन बुधन साहिब आफ़ ऐवरी कोस्ट, आदरणीया सलमा बेग़म साहिबा पत्नी डाक्टर राजा नज़ीर अहमद ज़फ़र साहिब,

आदरणीया किशवर तनवीर अरशद साहिबा पत्नी अबदुल-बाक़ी अरशद साहिब चेयरमैन शिर्कतुल इस्लामिया और आदरणीय अब्दुर्रहमान हुसैन मुहम्मद ख़ैर साहिब आफ़ सूडान का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

अल-जज़ायर और पाकिस्तान में अहमदियों की मुख़ालिफ़त को दृष्टिगत रखते हुए विशेषता दुआओं की पुनः तहरीक

चीनी डैसक की नई वेबसाइट के आरंभ की घोषणा

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 2 अप्रैल 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बा से पहले हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन चल रहा था। आज भी वही वर्णन होगा। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु में शर्म और लज्जा बहुत ज़्यादा थी। इस बारे में एक रिवायत है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत में से मेरी उम्मत पर सबसे ज़्यादा रहम करने वाले अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। अल्लाह के दीन में इन सबसे ज़्यादा मज़बूत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उनमें सबसे ज़्यादा हक़ीक़ी लज्जा वाले उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उनमें से सबसे उचित निर्णय करने वाले अली बिन अबी तालब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। उनमें से सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला की पुस्तक क़ुरआन को जानने वाले उबै बिन काअब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और उनमें से सबसे ज़्यादा हलाल-ओ-हराम को जानने वाले मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और उनमें से सबसे ज़्यादा फ़रायज़ को जानने वाले ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। सुनो हर उम्मत के लिए एक अमीन होता है और इस उम्मत का अमीन अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(सुंन इब्ने मांजा, इफ़्तिताह पुस्तक बाब फ़ज़ायल ज़ैद बिन साबित हदीस 154)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत पर सबसे ज़्यादा रहम करने वाले अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और अल्लाह के अहकाम की तामील-ओ-तनफ़ीज़ में उनमें सबसे ज़्यादा मज़बूत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और उनमें सबसे ज़्यादा लज्जा करने वाले उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(सुंन अल्-तिरमज़ी अबवाब मनाकिब बाब मनाक़िब मआज़ बिन जबल हदीस 3790)

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि न मैंने कभी लापरवाही की और न मैंने कभी तमन्ना की। (सुंन इब्ने मांजा पुस्तक किताब अत्तहारतो व सुननहा बाब कराहत मस्सज़करा बिल- यमीन वल यमीन हदीस नंबर311) अर्थात ख़िलाफ़त की या किसी भी ओहदे की या झूठी तमन्ना नहीं की।

हज़रतआयशा रज़ियल्लाहु अन्हा आप रज़ियल्लाहु अन्हु की लज्जा के बारे में रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे घर में अपनी रानों या पिंडुलीयों से कपड़ा हटाए हुए लेटे थे कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने आज्ञा मांगी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसी हालत में उन्हें आज्ञा दी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बातें करने लगे। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आज्ञा मांगी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसी हालत में उन्हें भी आज्ञा दे दी। फिर भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बातें करते रहे। फिर जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने आज्ञा मांगी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बैठ गए और अपने कपड़ों को ठीक किया। मुहम्मद जो रावी हैं कहते हैं कि मैं यह नहीं कहता कि ये सब एक दिन में हुआ। अलग अलग समय की बातें हो सकती हैं। वह आए बातें कीं और जब वह चले गए तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने निवेदन किया कि अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु आए लेकिन उन के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कोई ख़ास ख़्याल न किया। फिर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो उनके लिए भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कोई ख़ास ख़्याल न किया। लेकिन जब उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अंदर आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बैठ गए और अपने कपड़े ठीक करने लगे। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया क्या में उस व्यक्ति का लिहाज़ न करूँ जिससे फ़रिश्ते लज्जा हैं! एक दूसरी जगह इस रिवायत को वर्णन करते हुए यह बात लिखी है कि जब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया कि सिर्फ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह ऐसा ख़ास एहतिमाम क्यों किया? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने फ़रमाया : क्या में उस से लज्जा न करूँ जिससे फ़रिश्ते भी लज्जा करते हैं! उस ज़ात की क़सम जिसके नियंत्रण में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकी जान है वास्तव में फ़रिश्ते उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से उसी तरह लज्जा करते हैं जैसे वे फ़रिश्ते अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लज्जा करते हैं। यदि उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु अंदर आते और तो मेरे क़रीब ही होती तो उनमें इतनी लज्जा है कि वह वापिस जाने तक न ही अपना सिर ऊपर उठाते अर्थात नज़र ऊपर भी न उठाते और न ही कोई बात करते। (सही मुस्लिम पुस्तक फ़ज़ायल अलअसहाब रज़ियल्लाहु अन्हुमा बाब मिन फ़ज़ायल उस्मान बिन अफ़्फ़ान

रज़ियल्लाहु अन्हु, रिवायत 6209)(मजमा अलज़वायद भाग 9 पृष्ठ 59-60 पुस्तक मनाकिब बाब फ़ी हया हदीस नंबर 14504 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत, 2001 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की घटना वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं। यह घटना आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अल्लाह तआला की सिफ़त करीम के वर्णन में वर्णन फ़रमाया है कि अल्लाह तआला करीम है। फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक घटना है जिससे पता चलता है कि करीम से शर्म की जाती है। करीम जो सिफ़त है जिसमें हो उस से शर्म की जाती है। हदीसों में आता है कि एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर में लेटे हुए थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की टांगों का कुछ हिस्सा नंगा था कि हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु आए और बैठ गए। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए और बैठ गए परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कोई पर्वा न की। थोड़ी देर गुज़री थी कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने दस्तक दे दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तुरन्त उठ बैठे और अपनी टांगों को कपड़े से ढांक लिया और फ़रमाया उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत शर्मीला है। उस के सामने टांग का कुछ हिस्सा नंगा रखते हुए शर्म आती है। इस लिए हदीस के शब्द हैं (पहले वर्णन भी हुए हैं) हज़रतआयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर में बैठे हुए थे और अपनी पिंडुलियों से कपड़ा हटाया हुआ था। इसी हालत में अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने अंदर आने की आज्ञा चाही तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसी तरह लेटे रहे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आज्ञा दे दी, उनसे बात चीत फ़रमाते रहे। फिर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए। उन्होंने आज्ञा मांगी की। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आज्ञा दे दी और उसी तरह लेटे रहे। (लेटे हुए थे या बैठे थे।) फिर थोड़ी देर बाद उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उठ खड़े हुए और कपड़े को ठीक कर लिया और उनको अंदर आने की आज्ञा दे दी। जब सब चले गए तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमसे सवाल किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी आमद पर ख़ास पर्वा नहीं की और उसी तरह लेटे रहे जैसे लेटे थे लेकिन उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की आमद पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उठ खड़े हुए और कपड़े ठीक कर लिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया हे आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा! क्या मैं उस से शर्म न करूँ जिससे फ़रिश्ते भी शर्म करते हैं।

तो देखो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की शर्म का लिहाज़ किया कि वह लोगों से शरमाते थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनसे शरमाए अर्थात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों से शरमाते थे इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनसे शरमाए। इस घटना को वर्णन कर के आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया है कि ख़ुदा तआला के करीम होने से लोगों को गुनाहों से बचने की कोशिश करनी चाहिए। लज्जा करनी चाहिए उस की बात माननी चाहिए। न यह कि गुनाहों पर साहस पैदा हो जाए कि अल्लाह तआला बड़ा करीम है करम कर देगा। हमारे गुनाहों के बावजूद हम पर करम कर देगा। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इस बात को सामने रखना चाहिए कि यदि अल्लाह तआला की सिफ़त करीम है तो फिर बंदे को भी लज्जा करनी चाहिए और गुनाहों से बचने की कोशिश करनी चाहिए।

(उद्धरित तफ़सीर कबीर भाग 8 पृष्ठ 259)

खान पान और सादगी के बारे में आता है। अब्दुल्लाह रूमी वर्णन करते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु रात के वुज़ू का स्वयं इंतिज़ाम करते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ की गई कि यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हु कसी ख़ादिम को हुक्म दें तो वह आप रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए इंतिज़ाम कर दिया करे। इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : नहीं, रात तो उन लोगों की है जिस में ये आराम करते हैं। (अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साअद भाग तीन पृष्ठ 33 उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल अहया अल् तुर्रास अरबी बेरूत 1996 ई.)

अर्थात कि काम करने वाले ख़िदमत गुज़ारों को रात को आराम करने के लिए वक़्त देना चाहिए।

अलक़मा बिन वक़ास वर्णन करते हैं कि हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मिंबर पर थे कि हे उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु! आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस उम्मत को एक बहुत ही मुश्किल में डाल दिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़िताब फ़रमाया। कुछ बातें कीं, कुछ चेतावनियाँ उम्मत को दीं। अत: आप रज़ियल्लाहु अन्हु तौबा करें और वह भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ तौबा करें। अल्लाह का बड़ा ख़ौफ़ दिलाया था तो इस पर एक सहाबी ने यह अर्ज़ कर दिया। रावी कहते हैं इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसी वक़्त अपना चेहरा क़िबला रुख किया और अपने दोनों हाथ उठा कर कहा। اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ कि हे अल्लाह! वास्तव में मैं तुझसे बख़शिश तलब करता हूँ और तेरी ओर झुकता हूँ। और इस अवसर पर मौजूद लोगों ने भी अपने हाथ उठाए और यह दुआ की।

(अल् तब्कातुल कुबरा ले इब्ने साअद साद, भाग तीन पृष्ठ 39 उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत, 1996ई.) यह अल्लाह तआला से ख़ौफ़ और भय और आप रज़ियल्लाहु अन्हु की सादगी का स्थान है कि तुरन्त दुआ के लिए हाथ उठा लिए। किसी बेहस में नहीं पड़े। अपने लिए दुआ की, उम्मत के लिए दुआ की।

सख़ावत और फ़य्याज़ी और अल्लाह के मार्ग में खर्च करने के बारे में रवायात मिलती हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं वर्णन करते हैं कि मैंने दस चीज़ें अपने रब के हुज़ूर छुपा के रखी हुई हैं। मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वालों में से चौथा व्यक्ति हूँ। न मैंने कभी खेल कूद वाले गाने सुने और न कभी झूठी बात की है और जब से मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत की है तब से मैंने अपनी शर्मगाह को अपने दाएं हाथ से नहीं छुआ और इस्लाम क़बूल करने के बाद मुझ पर कोई जुमा ऐसा नहीं गुज़रा जिस में मैं ने कोई गर्दन आज़ाद न की हो उस जुमा को छोड़ कर के कि जिसमें मेरे पास आज़ाद करने के लिए कोई ग़ुलाम न हो। इस सूरत में मैं जुमा के इलावा किसी और दिन में ग़ुलाम आज़ाद कर देता था और मैंने न ज़माना-ए-जाहिलीयत में व्यभिचार किया और न ही इस्लाम में।

(मज्मा ज़वायद 9 पृष्ठ 65 पुस्तक मनाकिब बाब فيما كان فيه من الخير हदीस नंबर 14525 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के आज़ाद करदा ग़ुलाम अबू सईद वर्णन करते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने घर के घेराव के समय बीस ग़ुलाम आज़ाद किए।(उसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाबा ले इब्ने साअद भाग 3 पृष्ठ 489 उस्मान बिन अफ्फ़ान, दारुल फ़िकर बेरूत 2003 ई.)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हम नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमके साथ एक जंग में थे कि लोगों को भूक की तकलीफ़ आ पहुंची यहां तक कि मैंने मुस्लमानों के चेहरों पर परेशानी और मुनाफ़क़ीन के चेहरों पर ख़ुशी के आसार देखे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह कैफ़ीयत देखी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम! सूरज ग़ुरूब नहीं होगा कि अल्लाह तआला तुम्हारे लिए खाने के सामान फ़र्मा देगा। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को इस बात की ख़बर हुई तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अल्लाह और उसका रसूल बिल्कुल सच्च फ़रमाते हैं। इस लिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने चौदह ऊंट अनाज के साथ ख़रीदे और उनमें से नौ नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमकी ख़िदमत में भिजवा दिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह देखकर फ़रमाया कि यह क्या है? बताया गया कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ भेंट किए हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे पर ख़ुशी और प्रसन्नता फैल गई और मुनाफ़िक़ों के चेहरों पर बेचैनी और परेशानी छा गई। तब मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए यहां तक कि आपकी बग़ल की सफ़ेदी नज़र आने लगी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए दुआ की। मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को किसी और के हक़ में ऐसी दुआ करते हुए न पहले कभी सुना और न बाद में, और वह दुआ यह थी اَللّٰهُمَّ أَعْطِ عُثْمَانَ، اَللّٰهُمَّ افْعَلْ بِعُثْمَانَ। हे अल्लाह! उस्मान को बहुत अता फ़र्मा। अल्लाह! उस्मान पर अपना फ़ज़ल-ओ-करम नाज़िल फ़र्मा।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने गोश्त देखकर फ़रमाया यह किस ने भेजा है? मैं ने अर्ज़ किया हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने। आप रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि इस पर मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने दोनों हाथ उठा कर उस्मान के लिए दुआ

करते देखा।

(मज्मा ज़वायद भाग 9 पृष्ठ 64 पुस्तक मनाकिब बाब اعانته فی جیش العسرۃوغیرہ। हदीस 14520-14523 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

मुहम्मद बिन हिलाल अपनी दादी से रिवायत करते हैं कि उनकी दादी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ करती थीं जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु घर में कैद कर दिए गए थे। वह बताते हैं कि उनकी दादी के हाँ बेटा पैदा हुआ जिसका नाम हिलाल रखा गया। जब एक दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें मौजूद न पाया तो पूछने पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु को मालूम हुआ कि आज रात उनके हाँ बेटा पैदा हुआ है। मेरी दादी कहती हैं कि इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरी तरफ़ पच्चास दिरहम और एक बड़ी चादर में से टुकड़ा भिजवाया और फ़रमाया तेरे बेटे का वज़ीफ़ा है और ये उसके पहनने के लिए कपड़ा है। जब उसकी आयु एक वर्ष हो जाएगी तो हम उस का वज़ीफ़ा बढ़ा कर सो दिरहम कर देंगे। (अल् बदाय व्न्हाया ले इब्ने साअद भाग 4 जुज़ 7 पृष्ठ 206 सन् 35 हिज्री, فصل فی ذکر شیء من سیرتہ दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

इब्ने सईद बिन यर्बू वर्णन करते हैं कि में एक-बार दोपहर के वक़्त घर से निकला जबकि में बच्चा था। मेरे पास एक परिंदा था जिसे मैं मस्जिद में उड़ा रहा था। क्या देखता हूँ कि वहां एक ख़ूबसूरत चेहरे वाले बुज़ुर्ग लेटे हुए हैं। उनके सिर के नीचे ईंट या ईंट का कोई टुकड़ा था। तकिया की जगह ईंट रखी हुई थी। मैं खड़ा हो कर उनकी ख़ूबसूरती को आश्चर्य से देखने लगा। उन्होंने अपनी आँखें खोल कर मुझ से पूछा। हे बच्चे तुम कौन हो? मैंने अपने सम्बन्ध में बताया तो उन्होंने क़रीब ही सोए हुए एक लड़के को आवाज़ दी लेकिन उसने कोई जवाब न दिया। इस पर उन्होंने मुझे कहा कि उसे बुला कर लाओ। इस लिए मैं उसे बुला लाया। इस बुज़ुर्ग ने उसे कुछ लाने का हुक्म दिया और मुझे कहा कि बैठ जाओ। फिर वह लड़का चला गया और एक वस्त्र और एक हज़ार दिरहम लेकर आया। उन्होंने मेरा लिबास उतरवाया और उस की जगह मुझे वह वस्त्र पहना दिए और वे एक हज़ार दिरहम उस वस्त्र में डाल दिए। जब में अपने पिता के पास पहुंचा तो उन्हें ये सब कुछ बताया। इस पर उन्होंने कहा कि हे मेरे बेटे! क्या तुझे ज्ञात है कि किस ने तेरे साथ ऐसा सुलूक किया? मैंने कहा मुझे नहीं मालूम सिवाए उस के कि वह कोई ऐसा व्यक्ति था जो मस्जिद में सौ रहा था और इस से बढ़कर सुंदर मैंने कभी ज़िंदगी में किसी को नहीं देखा तो उन्होंने बताया कि वह अमीर-ऊल-मोमनीन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।(अल् बदाय व्न्हाया ले इब्ने साअद असीर भाग 4 जुज़ 7 पृष्ठ 206-207 सन् 35 हिज्री दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

इब्ने जरीर रिवायत करते हैं कि हज़रत तल्हा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से उस वक़्त मिले जबकि आप मस्जिद की तरफ़ जा रहे थे। हज़रत तल्हा ने कहा आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पच्चास हज़ार दिरहम जो मेरे ज़िम्मा थे वे अब उपलब्ध हो गए हैं। आप उन्हें वसूल करने के लिए किसी व्यक्ति को मेरी तरफ़ भेज दें। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे फ़रमाया कि आपकी विनम्रता के कारण से वे हम ने आपको भेंट कर दिए हैं। वे नहीं लेने।

असमी कहते हैं कि इब्ने आमिर ने कितन बिन औफ़ हिलाली को किरमान के इलाक़े पर गवर्नर बनाया। वह चार हज़ार मुस्लमानों का लश्कर लेकर निकला। रास्ते में एक वादी बारिश के पानी की वजह से बह पड़ी जिसकी वजह से उनका रास्ता बंद हो गया और कितन को समय पर न पहुंचने का अंदेशा हुआ तो उसने ऐलान किया कि जो व्यक्ति इस वादी को पार करेगा उस के लिए एक हज़ार दिरहम बतौर इनाम होगा। इस पर लोग तैर कर पार करने लगे। जब भी कोई व्यक्ति वादी को पार कर लेता तो कतन कहते उसे उस का जायज़ा अर्थात इनाम दो। यहां तक कि सारे लश्कर ने वादी पार कर ली और इस प्रकार इन सबको चालीस लाख दिरहम दिए गए परन्तु गवर्नर इब्ने आमिर ने कतन को यह रक़म देने से इंकार कर दिया और ये बात हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में तहरीर की। इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि यह रक़म कतन को दे दो क्योंकि उसने तो अल्लाह के रास्ते में मुस्लमानों की मदद की है। अत: इस वादी को उबूर करने की वजह से उस दिन से इनाम में दी जाने वाली रक़म का नाम जवायज़ पड़ गया। जो जायज़ा की जमा है। (अल् बदाय व्न्हाया ले इब्ने साअद असीर भाग 4 जुज़ 7 पृष्ठ 208 सन् 35 हिज्री दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से, एक दफ़ा जब बीमार हुए थे तो ख़लीफ़ा निर्धारित करने की दरख़ास्त भी की गई। इस घटना को हश्शाम ने अपने बाप से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा कि मरवान बिन हकम ने मुझे बताया कि जिस साल नक्सीर की बीमारी फैली हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु को भी सख़्त नक्सीर हुई। नाक में से ख़ून आने लगा यहां तक कि इस बीमारी ने उनको हज से रोक दिया और उन्होंने वसीयत कर दी तो उस वक़्त क़ुरैश में से एक व्यक्ति उनके पास आया और कहने लगा किसी को ख़लीफ़ा निर्धारित कर दें। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की ऐसी हालत हो रही है किसी को ख़लीफ़ा निर्धारित कर दें। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा क्या लोगों ने यह बात कही है? उसने कहा कि हाँ। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर पूछा कि किस को ख़लीफ़ा बनाना चाहते हैं? वह ख़ामोश रहा। इतने में एक और व्यक्ति उनके पास आया। मैं समझता हूँ कि वह हारिस था। कहने लगा कि ख़लीफ़ा निर्धारित कर दें। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया क्या लोगों ने यह कहा है? उसने कहा हाँ। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा वह कौन है जो ख़लीफ़ा होगा? वह ख़ामोश रहा। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा शायद वे कहते हैं ज़ुबैर को। उसने कहा हाँ। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है जहां तक मुझे इलम है बे उनमें से वास्तव में बेहतर है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी इन सबसे ज़्यादा प्यारा था।

(सही बुख़ारी, पुस्तक फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी बाब मनाक़िब ज़ूबैर बिन अवाम हदीस 3717)

आपको वह्यी के लिखने का भी अवसर मिला। एक रिवायत में है कि सूरत मुज़म्मिल के नुज़ूल के अवसर पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को वह्यी के लिखने की सआदत मिली। उम्मे कुलसूम बिन सुमअमा वर्णन करती हैं कि मैंने हज़रतआयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा कि हम आप रज़ियल्लाहु अन्हु से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में पूछते हैं क्योंकि लोग उनके बारे में हमसे बकसरत पूछ रहे हैं। इस पर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इस घर में एक शदीद गर्म रात में देखा जबकि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर हज़रत जिबराईल वह्यी नाज़िल कर रहे थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर नुज़ूल-ए-वह्यी होता तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर बहुत शदीद बोझ नाज़िल हो जाता था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है। اِنَّا سَنُلْقِیْ عَلَیْكَ قَوْلًا ثَقِیْلًا अल्-मुज़म्मिल : 6, कि वास्तव में हम तुझ पर एक भारी फ़रमान उतारेंगे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने बैठे लिखते जा रहे थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़र्मा रहे थे कि हे उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु लिख। हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि अल्लाह तआला, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ऐसा क़ुरब किसी निहायत मुअज़्ज़िज़-ओ-आदरणीय व्यक्ति को ही अता फ़रमाता है। (कन्ज़ुल अम्माल भाग 7 जुज़ 13 पृष्ठ 23 पुस्तक अलफ़ज़ायल फ़ज़ायल सहाबा, हदीस 36217 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में क़ुरआन-ए-करीम के लिखित पृष्ठ जमा हुए जो उन्होंने अपने पास रखे। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास वे पृष्ठ रहे। इस के बाद हज़रत हफ़सा बिंत उमर रज़ियल्लाहु अन्हा के पास रहे। जब हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त का दौर आया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पास ये नुस्ख़े पहुंचने की रिवायत इस तरह मिलती है। हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमन वर्णन करते हैं कि वह अहल-ए-इराक़ के साथ मिलकर फ़तह आरमीनीया और आज़रबाईजान के लिए अहले शाम से जंग कर रहे थे और वहां से लौट कर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को इन इलाक़ों के लोगों की क़ुरआन-ए-करीम की किरात में इख़तिलाफ़ की वजह से ख़ौफ़ हुआ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया कि हे अमीर-ऊल-मोमनीन इस उम्मत को सम्भालें क़बल इस के कि वे अल्लाह की पुस्तक के बारे में यहूद-ओ-नसारा की भांति इख़तिलाफ़ करने लग जाएं। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में पैग़ाम भेजा कि क़ुरआन-ए-करीम के लिखित पृष्ठ हमें भेज दें ता कि हम उनके नुस्ख़े तैयार करें। इस के बाद वो पृष्ठ आपको वापिस लौटा देंगे। इस लिए हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वे पृष्ठ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में भिजवा दिए। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह

बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हश्शाम रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि वह उनकी प्रतियाँ तैयार करें। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऊपर वर्णित तीनों सहाबा को जो क़ुरैश से थे कहा कि जब तुम्हारा और ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ुरआन के किसी टुकड़े के सम्बन्ध में इख़तिलाफ़ हो तो उसे क़ुरैश की भाषा में तहरीर करो क्योंकि क़ुरआन-ए-करीम क़ुरैश की भाषा में उतरा है। इस लिए इन अस्हाब ने ये काम किया। जब प्रतियाँ तैयार हो गईं तो असली पृष्ठ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा को वापिस भिजवा दिए और नए तैयार शूदा नुस्ख़े मुख़्तलिफ़ देशों में भिजवा कर हुक्म दिया कि इस के इलावा जो भी अन्य नुस्ख़े हों वो जला कर नष्ट कर दिए जाएं।

(सही बुख़ारी फ़ज़ायलुल-क़ुरआन बाब जमा क़ुरआन-हदीस 4986-4987)

अल्लामा इब्नुत्तीन कहते हैं कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के जमा क़ुरआन की घटना का फ़र्क़ यह है कि हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुरआन को इस ख़ौफ़ से जमा किया कि कहीं हुफ़्फ़ाज़ क़ुरआन के वफ़ात पा जाने की वजह से क़ुरआन का कुछ हिस्सा ज़ाए न हो जाए क्योंकि क़ुरआन एक स्थान पर नहीं किया गया था। लिहाज़ा आपने क़ुरआन-ए-करीम को इस की आयात की उस तर्तीब के अनुसार जमा किया जिस तर्तीब के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें क़ुरआन-ए-करीम हिफ़्ज़ करवाया था जबकि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के जमा क़ुरआन की घटना यह है कि जब किरात में बहुत ज़्यादा इख़तिलाफ़ होने लगा यहां के लोगों ने अपने लहजा और शब्दकोष के अनुसार क़ुरआन पढ़ना शुरू कर दिया यहाँ तक कि एक दूसरे की किरात को ग़लत क़रार देने लगे तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु डरे कि कहीं यह मुआमला संगीन रूप न इख़तियार कर जाए। इस लिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन पृष्ठों को जो हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने तैयार करवाए थे एक क़ुरआन मजीद में सूरतों की तर्तीब के साथ जमा कर दिया और सिर्फ क़ुरैश के शब्दकोष को मलहूज़ रखा और यह दलील दी कि क़ुरआन का नुज़ूल क़ुरैश की भाषा में हुआ है। यदि इबतिदा में आसानी की ख़ातिर दूसरे शब्दकोष के अनुसार क़ुरआन की तिलावत की आज्ञा दी गई थी परन्तु जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि अब ऐसा करने की हाजत नहीं रही तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक ही शब्दकोष की किरात पर इकतिफ़ा का इरशाद फ़रमाया। अल्लामा कुरतबी फ़रमाते हैं यदि यह सवाल किया जाए कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों को अपने वाले क़ुरआन मजीद पर जमा करने की ज़हमत क्यों उठाई जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु से पूर्व हज़रत अबू बक़र रज़ियल्लाहु अन्हु इस काम को कर चुके थे तो इस का जवाब यह है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो किया उस का उद्देश्य क़ुरआन मजीद की तदवीन पर लोगों को जमा करना नहीं था। क्या आप देखते नहीं कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उम्मुल मोमनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा को कहला भेजा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हा क़ुरआन के पृष्ठ हमें भेज दें हम उनकी कापीयां बना कर असल सहीफ़े आप रज़ियल्लाहु अन्हु को वापिस कर देंगे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह क़दम केवल इसलिए उठाया कि किरात क़ुरआन के बारे में लोग इख़तिलाफ़ करने लगे थे। क्योंकि सहाबा मुख़्तलिफ़ शहरों में जा चुके थे और इख़तिलाफ़-ए-किरायत की सूरत-ए-हाल संगीन हो चुकी थी और अहल शाम-ओ-इराक़ के दरमयान इख़तिलाफ़ ने वह शक्ल इख़तियार कर ली थी जिसको हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन किया है।

(सीरत अमीरुल मोमिनीन उस्मान बिन अफ़्फ़ान, अली मुहम्मद से पृष्ठ 231-232 दारुल मार्फा बेरूत लुबनान 2006)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत अल्-आला की आयत سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى की तफ़सीर वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "इस आयत के अर्थ यह हैं कि हम तुम्हें वह कलाम सिखाएँगे जिसे क़ियामत तक तुम नहीं भोलोगे बल्कि यह कलाम इसी तरह सुरक्षित रहेगा जिस तरह इस वक़्त है। इस लिए इस दावा का सबूत यह है कि इस्लाम के बड़े से बड़े दुश्मन भी आज खुले शब्दों यह स्वीकार करते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम उसी शक्ल-ओ-सूरत में सुरक्षित है जिस शक्ल-ओ-सूरत में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे प्रस्तुत फ़रमाया था। नोल्ड (theodor noldeke) स्प्रिंगर (springer) और विलियम मियूर (william muir) सबने अपनी पुस्तकों में स्वीकार किया है कि क़तई और यक़ीनी तौर पर हम क़ुरआन-ए-करीम के अतिरिक्त और किसी पुस्तक के सम्बन्ध में यह नहीं कह सकते कि जिस शक्ल में सिलसिला के संस्थापक ने वह पुस्तक प्रस्तुत की थी उसी शक्ल में वह दुनिया के सामने मौजूद है। सिर्फ क़ुरआन-ए-करीम ही एक ऐसी पुस्तक है जिसके सम्बन्ध में निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि जिस शक्ल में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को यह पुस्तक दी थी उसी शक्ल में अब भी सुरक्षित है। वे लोग चूँकि इस बात के क़ायल नहीं कि क़ुरआन-ए-करीम ख़ुदा तआला ने नाज़िल किया है बल्कि वे यह अक़ीदा रखते हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह पुस्तक स्वयं बनाई है इसलिए वे यह तो नहीं कहते कि जिस शक्ल में यह पुस्तक नाज़िल हुई थी उसी शक्ल में सुरक्षित है परन्तु वे यह ज़रूर कहते हैं कि जिस शक्ल में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह पुस्तक प्रस्तुत की थी उसी शक्ल में यह पुस्तक अब तक दुनिया में पाई जाती है। इस लिए सर विलियम मियूर अपनी पुस्तक "दी कुरान"(उल-क़ुरआन) में लिखते हैं। "यह समस्त सबूत दिल को पूरी तसल्ली दिला देते हैं कि वह क़ुरआन जिसे हम आज पढ़ते हैं शब्द शब्द वही है जिसे नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)ने लोगों को पढ़ कर सुनाया था।"

फिर सर विलियम मियूर अपनी पुस्तक "लाईफ़ आफ़ मुहम्मद" में लिखते हैं कि "अब जो क़ुरआन हमारे हाथों में है मानों बिल्कुल मुम्किन है कि मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अपने ज़माना में उसे स्वयं बनाया हो और कई दफ़ा इस में स्वयं ही कुछ बदलाव भी कर दिए हों परन्तु इस में संदेह नहीं कि यह वही क़ुरआन है जो मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हमें दिया था। "इसी तरह से लिखते हैं कि "हम निहायत मज़बूत विचारों के आधार पर कह सकते हैं कि हर एक आयत जो क़ुरआन में है वह असली है। और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम (आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की बिना फैर बदल की पुस्तक है।"

फिर नोल्ड के जर्मन मुस्तश्रिक़ (वह गैर एशियाई व्यक्ति जिसे एशियाई भाषाओं अथवा विद्याओं का पूरा-पूरा ज्ञान हो और उसने इन विषयों पर काफ़ी अनुसंधान और गवेषणा की हो) लिखता है कि "मुम्किन है कि तहरीर की कोई मामूली गलतीयां (अर्थात लिखने में गलती की हो तो हूँ लेकिन जो क़ुरआन उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुनिया के सामने प्रस्तुत किया था उस का मज़मून वही है जो मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने प्रस्तुत किया था। जबकि उस की तर्तीब अजीब है। यूरोपीयन उलमा की यह कोशिशें कि वह साबित करें कि क़ुरआन में बाद के ज़माना में भी कोई तबदीली हुई बिल्कुल नाकाम साबित हुई हैं।

उल-ग़र्ज़ यूरोपीयन लेखकों ने भी यह स्वीकार किया हैकि जहां तक क़ुरआन की ज़ाहिरी हिफ़ाज़त का प्रश्न है इस में किसी किस्म का संदेह नहीं किया जा सकता। बल्कि लफ़्ज़न लफ़्ज़न और हर्फ़न हर्फ़न यह वही पुस्तक है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को पढ़ कर सुनाई।"

(तफ़सीर कबीर भाग 8 पृष्ठ 421-422)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ुरआन का जमा करने वाला बतलाते हैं। यह बात ग़लत है। सिर्फ उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के लफ़्ज़ के साथ क़ाफ़िया मिलाया है। हाँ क़ुरआन का प्रकाशन यदि कहें तो किसी हद तक सही है। आपकी ख़िलाफ़त के ज़माना में इस्लाम दूर दूर तक फैल गया था इस लिए आपने कुछ प्रतियाँ नक़ल करा कर मक्का, मदीना, शाम, बस्रा, कूफ़ा और बिलाद में भिजवा दीए थे और जमा तो अल्लाह तआला की पसंद की हुई तर्तीब के साथ नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमही ने फ़रमाया था और इसी पसंदीदा तर्तीब के साथ हम तक पहुंचाया गया है। हाँ उस का पढ़ना और जमा करना हम सब के ज़िम्मे है।''

(हक़ायकुल फ़ुर्कान भाग 4 पृष्ठ 272)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना में कि जब बजाय इस के कि मक्का वाले मक्का में रहते, मदीना वाले मदीना में रहते, नजद वाले नजद में रहते, तायफ वाले तायफ में रहते, यमन वाले यमन में रहते और वे एक दूसरे की ज़बान और मुहावरात से अज्ञान होते। मदीना दार-उल-हकूमत बन गया तो समस्त कौमें एक हो गईं क्योंकि उस वक़्त मदीना वाले हाकिम थे जिनमें एक बड़ा तबक़ा मुहाजिरीन मक्का का था और स्वयं अहले मदीना भी अहले मक्का की सोहबत में हिजाज़ी अरबी सीख चुके थे। अत: चूँकि क़ानून का नफ़ाज़ उनकी और से होता था। माल उनके क़बज़ा में था "अर्थात हुकूमत उनके पास थी।" और दुनिया की निगाहें उन्ही की तरफ़ उठती हैं। उस वक़्त तायफ के भी और नजद के भी और मक्का के भी और यमन के भी और दूसरे इलाक़ों के भी अक्सर लोग मदीना में आते-जाते थे और मदीना के मुहाजिर अंसार

से मिलते और दीन सीखते थे और इसी तरह सब मुल्कों की इलमी ज़बान एक होती जाती थी। फिर कुछ उन लोगों में से मदीना में ही आ कर बस गए थे। उनकी ज़बान तो मानों बिल्कुल ही हिजाज़ी हो गई थी। यह लोग जब अपने वतनों को जाते होंगे तो चूँकि यह उल्मा और उस्ताद होते थे वास्तव में उन के इलाक़ा पर उनके जाने की वजह से भी ज़रूर असर पड़ता था। इसके अतिरिक्त जंगों की वजह से अरब के मुख़्तलिफ़ क़बायल को इकट्ठा रहने का अवसर मिलता था और अफ़्सर चूँकि बड़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु होते थे उनकी सोहबत और उनकी नक़ल की तिब्बी ख़ाहिश भी ज़बान में एक रूप पैदा करती थी। अत: जबकि शुरू में तो लोगों को क़ुरआन-ए-करीम की भाषा समझने में दिक्कतें प्रस्तुत आती होंगी परन्तु मदीना के दार-उल-हकूमत बनने के बाद जब समस्त अरब का मर्कज़ मदीना मुनव्वरा बन गया और क़बायल और अक़्वाम ने बार-बार वहां आना शुरू कर दिया तो फिर उस इख़्तिलाफ़ का कोई इमकान नहीं रहा। क्योंकि उस वक़्त समस्त इलमी स्वभाव के लोग क़ुरआन की भाषा से पूरी तरह वाक़िफ़ हो चुके थे। इस लिए जब लोग अच्छी तरह वाक़िफ़ हो गए तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुक्म दिया कि आगे केवल हिजाज़ी किरात पढ़ी जाए। और कोई किरात पढ़ने की आज्ञा नहीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के इस हुक्म का मतलब यही था कि अब लोग हिजाज़ी भाषा को आम तौर पर जानने लग गए हैं इस लिए कोई वजह नहीं कि उन्हें हिजाज़ी अरबी के शब्द का बदल इस्तिमाल करने की आज्ञा दी जाए।

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के इस हुक्म की वजह से ही शीया लोग जो सुन्नीयों के मुख़ालिफ़ हैं कहा करते हैं कि मौजूदा क़ुरआन ब्याज़-ए-उस्मानी है हालाँकि यह आरोप बिल्कुल ग़लत है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना तक अरबों के मेल-जोल पर एक लंबा अरसा गुज़र चुका था और वह आपस के मेल-जोल की वजह से एक दूसरे की ज़बानों के फ़र्क़ से पूरी तरह आगाह हो चुके थे। उस वक़्त इस बात की कोई ज़रूत नहीं थी कि किरायतों में भी लोगों को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने की आज्ञा दी जाती। यह आज्ञा केवल वक़्ती तौर पर थी और इस ज़रूरत के अधीन थी कि आरंभिक ज़माना था, कौमें मुतफ़र्रिक़ थीं और ज़बान के मामूली-मामूली फ़र्क़ की वजह से शब्द के मआनी भी तबदील हो जाते थे। इस नुक़्स की वजह से आरिज़ी तौर पर कुछ शब्द को जो इन क़बायल में प्रचलित थे असल वह्यी के बदल के तौर पर ख़ुदा तआला की वह्यी के अनुसार पढ़ने की आज्ञा दी गई थी ताकि क़ुरआन-ए-करीम के आदेशों के समझने और इस की शिक्षा से रोशनास होने में किसी किस्म की रोक हायल न हो और हर भाषा वाला अपनी भाषा के मुहावरात में उसके आदेशों को समझ सके और अपने लेहजा के अनुसार पढ़ सके। जब बीस वर्ष का समय इस आज्ञा पर गुज़र गया। ज़माना एक नई शक्ल इख़्तियार कर गया। कौमें एक नया रंग इख़्तियार कर गईं। वह अरब जो विभिन्न क़बायल पर मुश्तमिल था एक ज़बरदस्त क़ौम बल्कि एक ज़बरदस्त हुकूमत बन गया। मुल्क के कानून का निफ़ाज़ और शिक्षा का निज़ाम का आरंभ उनके हाथ में आ गया। पदों की तक़सीम उनके इख़्तियार में आ गई। हदूद और क़िसास के अहकाम का आरंभ उन्होंने शुरू कर दिया तो उसके बाद असली क़ुरआन की भाषा के समझने में लोगों को कोई दिक्कत न रही और जब यह हालत पैदा हो गई तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस अस्थाई आज्ञा को जो केवल वक़्ती हालात के अधीन दी गई थी मंसूख़ कर दिया और यही अल्लाह तआला की मंशा थी परन्तु शीया लोग हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु का सबसे बड़ा क़सूर यदि क़रार देते हैं तो यही कि उन्होंने मुख़्तलिफ़ किरातों को मिटा कर एक किरायत जारी कर दी। हालाँकि यदि वे ग़ौर करते तो आसानी से समझ सकते थे कि ख़ुदा तआला ने मुख़्तलिफ़ किरातों में क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने की आज्ञा इस्लाम के दूसरे दौर में दी है, आरंभिक दौर में नहीं दी। जिस के साफ़ अर्थ यह हैं कि क़ुरआन-ए-क्रीम का नुज़ूल जबकि हिजाज़ी भाषा में हुआ है परन्तु किरातों में फ़र्क़ दूसरे क़बायल के इस्लाम लाने पर हुआ। चूँकि कई दफ़ा एक क़बीला अपनी ज़बान के लिहाज़ से दूसरे क़बीला से कुछ फ़र्क़ रखता था और या तो वे उच्चारण सही तौर पर अदा नहीं कर सकताथा या उन शब्द का अर्थों के लिहाज़ से फ़र्क़ हो जाता था। इस लिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की मंशा के अधीन कुछ अख़्तिलाफ़ी शब्दों के लहजा के बदलने या उस की जगह दूसरे लफ़्ज़ रखने की आज्ञा दे दी। परन्तु उस का आयात के अर्थों या उनके मफ़हूम पर कोई असर नहीं पड़ता था बल्कि यदि यह आज्ञा न दी जाती तो फ़र्क़ पड़ता। इस लिए इस का सबूत इस बात से मिलता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक सूरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद को और तरह पढ़ाई और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को और तरह पढ़ाई क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ालिस शहरी थे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु गडरिया थे और इस वजह से बदवी लोगों से उनका ताल्लुक़ ज़्यादा था। अत: दोनों भाषाओं में बहुत बड़ा फ़र्क़ था। एक दिन अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन-ए-करीम की वही सूरत पढ़ रहे थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पास से गुज़रे और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु को किसी क़दर फ़र्क़ से इस सूरत की तिलावत करते सुना। उन्हें बड़ा आश्चर्य आया कि यह क्या बात है कि शब्द कुछ और हैं और यह कुछ और तरह पढ़ रहे हैं। इस लिए उन्होंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के गले में पटका डाला और कहा चलो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मैं अभी तुम्हारा मुआमला प्रस्तुत करता हूँ। तुम सूरत के कुछ शब्द और तरह पढ़ रहे हो और असल सूरत और तरह है। उद्देश्य वह उन्हें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लाए और अर्ज़ किया। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह सूरत मुझे और तरह पढ़ाई थी और अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु और तरह पढ़ रहे थे। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया तुम यह सूरत किस तरह पढ़ रहे थे? वह डरे और काँपने लग गए कि कहीं मुझ से ग़लती न हो गई हो परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया डरो नहीं, पढ़ो। उन्होंने पढ़ कर सुनाई तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बिल्कुल ठीक है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तो मुझे और तरह पढ़ाई थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया : वह भी ठीक है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया क़ुरआन-ए-करीम सात किरातों में नाज़िल किया गया है तुम इन मामूली-मामूली बातों पर आपस में लड़ा न करो। इस फ़र्क़ की वजह वास्तव में यही थी कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समझा अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु गडरिया हैं और उनका और लहजा है इस लिए उनके लहजा के अनुसार जो किरात थी वह उन्हें पढ़ाई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सम्बन्ध में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सोचा कि यह ख़ालिस शहरी हैं इस लिए उन्हें असल मक्की ज़बान की नाज़िल शूदा किरात बताई। इस लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु को उनकी अपनी ज़बान में सूरत पढ़ने की आज्ञा दे दी और हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़ालिस शहरी ज़बान में वह सूरत पढ़ा दी। इस किस्म के छोटे-छोटे फ़र्क़ हैं जो मुख़्तलिफ़ किरातों की वजह से पैदा हो गए थे परन्तु उनका नफ़्स-ए-मज़मून पर कोई असर नहीं पड़ता था। हर व्यक्ति समझता था कि यह सभ्यता और शिक्षा और भाषा के फ़र्क़ का एक लाज़िमी तमद्दुन हिस्साहै।''

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "सभ्यता और हुकूमत के द्वारा से क़बायली हालत की जगह एक क़ौमीयत और एक भाषा ने ले ली और सब लोग हिजाज़ी भाषा से पूरी तरह अवगत हो गए तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने समझा और सही समझा कि अब इन किरातों को क़ायम रखना मतभेदों को क़ायम रखने का कारण होगा। इस लिए इन किरातों का आम इस्तिमाल अब बंद करना चाहीए, बाक़ी पुस्तके किरात में तो वह सुरक्षित रहेंगी। अत: उन्होंने इस नेक ख़्याल के अधीन आम इस्तिमाल में हिजाज़ी और असल किरात के सिवा बाक़ी किरातों से मना फ़र्मा दिया और अरबों और अजमियों को एक ही किरात पर जमा करने के लिए तिलावत के लिए ऐसे नुस्ख़ों की आज्ञा दी जो हिजाज़ी और आरंभिक किरात के अनुसार थे।"

(तफ़सीर कबीर भाग 9 पृष्ठ 49 से 51)

कुछ थोड़ा सा वर्णन बाक़ी रह गया है। इन शा अल्लाह आगे। आज भी दुआ के लिए कहना चाहता हूँ पाकिस्तान के लिए भी अल-जज़ायर के अहमदियों के लिए भी और दुनिया में हर जगह जहां-जहां अहमदी मुश्किलात में गिरफ़्तार हैं दुआ करें अल्लाह तआला उनकी मुश्किलात को दूर फ़रमाए और खासतौर पर पाकिस्तान में क़ानून की वजह से मुख़्तलिफ़ वक़्तों में अहमदियों के लिए मुश्किलात खड़ी की जाती हैं और किसी सूरत में भी अब उनकी वे आज़ादी नहीं रही। इसी तरह अल-जज़ायर में भी कुछ हुकूमती अधिकारी मुश्किलात खड़ी करते रहते हैं। अल्लाह तआला अहमदियों को इन सब मुश्किलात से आज़ादी अता फ़रमाए।

नमाज़-ए-जुमा के बाद में वेबसाइट का भी लॉन्च करूँगा जो चीनी डैसक की वेबसाइट है और मर्कज़ी आई. टी. टीम के सहयोग से यह वेबसाइट बनाई गई है

जिस से लोगों को चीनी भाषा में इस्लाम और अहमदियत के सम्बन्ध में तफ़सीली मालूमात मिल सकेंगी। इस वेबसाइट को जमाअत की मेन वेबसाइट अल्-इस्लाम के ज़रीया भी और अलैहदा तौर पर भी वीज़िट किया जा सकेगा। इस में मुख़्तलिफ़ विषयों के अधीन सामग्री डाली गई है। क़ुरआन-ए-करीम के चीनी अनुवाद का नया ऐडीशन डाला गया है। इस के अतिरिक्त तेईस अन्य कुतुब और पमफ़्लेटस दिए गए हैं। सवाल-ओ-जवाब के अधीन मुख़्तलिफ़ सवालों के जवाब दिए गए हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शीर्षक के अधीन हुज़ूर अक़्दस अलैहिस्सलाम और खलि़फ़ा का परिचय दिया गया है। पहले पृष्ठ पर जमाअत की अन्य छ: वैबसाईटस के लिंक दिए गए हैं। इसके इलावा राबते के लिए फ़ोन, फैक्स और ई मेल इत्यादि की तफ़सील दी गई है। ख़ुदा करे कि यह वेबसाइट चीनी लोगों के लिए हिदायत का मूजिब हो और इस्लाम और अहमदियत के लिए उनके दिल खुलें।

इसके इलावा मैं कुछ (की) नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा। जिनका जनाज़ा पढ़ाना है उनमें से पहला जो वर्णन है आदरणीय मुहम्मद यूनुस ख़ालिद साहिब मुरब्बी सिलसिला का है जो 15 मार्च को ह्रदय की धड़कन बंद होने के कारण से 67 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

मुहम्मद यूनुस ख़ालिद साहिब के दादा हज़रत मियां मुराद बख़श साहिब और उनके भाई हज़रत हाजी अहमद साहब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा में से थे। छ: लोगों का क़ाफ़िला स्थान प्रेम कोट ज़िला हाफ़िज़ाबाद से पैदल क़ादियान गया था। इस क़ाफ़िला में हज़रत हाजी अहमद साहब मौजूद थे। उन्होंने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से तबरक़ का पानी माँगा और हज़ूर ने अता फ़रमाया। आदरणीय यूनुस ख़ालिद साहिब ने मैट्रिक रब्वाह से की। इसके बाद जामिआ में दाख़िल हो गए और उस समय जामिआ अरबी फ़ाज़िल भी किया। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। 1980 ई. में जामिआ अहमदिया से शाहिद पास किया फिर चालीस वर्ष तक उनको मुख़्तलिफ़ जगहों पर, पाकिस्तान में भी और बैरूनी देशों में अफ़्रीक़ा में भी सिलसिला की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। उनके परिजनों में उनकी पत्नी मर्यम सिद्दीक़ा साहिबा हैं और एक बेटा है अतीक़ अहमद मुबश्शिर जो मुरब्बी सिलसिला हैं।

यह अतीक़ अहमद मुबश्शिर वर्णन करते हैं कि मेरे पिता एक आलिम बाअमल इन्सान थे। अक्सर मुझे कहा करते थे कि ख़ुदा तआला ने मेरे साथ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु वाला सुलूक रखा है। जब भी मुझे कोई ज़रूरत प्रस्तुत आती है अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से वह पूरी कर देता है और इस का मुशाहिदा मैंने भी कई बार किया। फिर यही बेटे राना मुबारक अहमद साहिब के हवाले से जो लाहौर में सदर हलक़ा थे, लिखते हैं कि वह कहा करते थे कि जब भी कोई जमाअती काम आता आदरणीय मुरब्बी साहिब तुरन्त उसे अंजाम देते और यह भी ख़्याल न करते थे कि जूता भी पहना हुआ है या नहीं। फ़ौरी तौर पर तेज़ी से काम के लिए निकल जाया करते थे। माली क़ुर्बानी में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे। हरीपूर हज़ारा के अमीर साहिब कहा करते थे कि मुरब्बी साहिब पूरे तरबैला जमाअत के लिए एक मिसाली चंदा देने वाले हैं। वफ़ात याफ़्तगान बुज़ुर्गान का चंदा भी बाक़ायदगी से अदा करते थे। उनके साढ़ू वर्णन करते हैं कि चंदों के मुआमले में बड़े हस्सास थे विशेषता अपनी वसीयत के चंदों की अदायगी में मुस्तइद रहते थे। मरहूम निहायत दुआ-गो और दरवेश इन्सान थे। मरहूम ग़रीब लोगों को तलाश कर के उनकी गुप्त रूप से माली सहायता किया करते थे। रिश्तेदारों में ग़रीबों की बच्चीयों की शादीयों के अवसर पर जहेज़ का सामान ख़रीद कर दिया करते थे। रिश्तेदार कह रहे हैं कि हम एक मुख़लिस और माली इमदाद करने वाले प्यारे मेहरबान वजूद से महरूम हो गए हैं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा आदरणीय डाक्टर निज़ामुद्दीन बुधन साहिब ऐवरी कोस्ट का है। यही 15 मार्च को तहत्तर वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

उन्होंने आरंभिक शिक्षा मारीशस से हासिल की। 1968 ई. में हज़रत ख़लीफ़-तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने उनको स्कॉलरशिप दी और आपने पाकिस्तान आ कर पहले एफ़. एस.सी की शिक्षा तालीमुल इस्लाम कॉलेज से की फिर मैडीकल कॉलेज में दाख़िला लिया और डाओ मेडिकल कॉलेज (dow medical college) से उन्होंने एम.बी.बी.ऐस की। 1978 ई. में हज़रत ख़लीफ़-तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने उनका तक़र्रुर नाइजीरिया के अहमदिया क्लीनिक में बतौर इंचार्ज क्लीनिक फ़रमाया और 84 ई. तक वहां ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई और जब 1980 ई. में हज़रत ख़लीफ़-तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला घाना के दौरे पर तशरीफ़ ले गए थे तो उस अवसर पर जमाअत अहमदिया ऐवरी कोस्ट के वफ़द ने घाना पहुंच कर हुज़ूर से मुलाक़ात का शरफ़ हासिल किया और इस वफ़द ने हुज़ूर की ख़िदमत में निवेदन किया कि जिस तरह जमाअत अहमदिया घाना में हस्पताल हैं हमारे ऐवरी कोस्ट में भी खोला जाए। बहरहाल हज़ूर ने इस को मंज़ूर फ़रमाया और इसके लिए कार्रवाई शुरू हुई। डाक्टर साहिब 18 मार्च 1983 ई. को लेगोस (lagos) से ऐवरी कोस्ट पहुंचे और वज़ारत-ए-सेहत के आफ़िसरान से मुलाक़ात की। क्योंकि फ्रैंच भाषा जानते थे इसलिए फ्रैंच डाक्टर की ज़रूरत थी तो उनको नाइजीरिया से वहां भिजवा दिया गया और उनको अहमदिया डिसपेंसरी खोलने की वहां आज्ञा मिल गई। 1984 ई. से ले के वफ़ात तक आप ऐवरी कोस्ट में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाते रहे। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे। उनकी पत्नी भी वफ़ात पा चुकी हैं। एक बेटा है बशीरुद्दीन महमूद बुधन और बेटी हैं नाशीमा आयशा मुबारका। अल्लाह तआला इन बच्चों को भी ख़िलाफ़त और जमाअत से जोड़े रखे।

अब्दुल क़य्यूम पाशा साहिब ऐवरी कोस्ट के अमीर मिशनरी इंचार्ज कहते हैं कि ऐवरी कोस्ट में तक़रीबन छत्तीस वर्ष अहमदिया क्लीनिक आबीजान में बतौर मैडीकल अफ़्सर के अपनी ख़िदमात प्रस्तुत कीं। आप एक बहुत अच्छे डाक्टर, एक अच्छे इन्सान और जमाअत अहमदिया ऐवरी कोस्ट के नुमायां बुज़ुर्ग मैंबर थे। कहते हैं कि विनीत का डाक्टर साहिब के साथ तक़रीबन अठारह वर्ष का साथ था। उनको हर रंग में अच्छा इन्सान पाया। हर एक की मदद करने वाले, जमाअती कामों में रहनुमाई करने वाले और मेहमान नवाज़, ख़ुशअख़लाक़, मुस्कुरा कर बात करने वाले इन्सान थे। जमाअत के मुख़्तलिफ़ ओहदों पर भी निर्धारित रहे। बहुत विनम्रता वाले थे। बच्चों के साथ बहुत प्यार मुहब्बत का सुलूक करते। अक्सर बच्चों को तहायफ़ के तौर पर देने के लिए क्लीनिक में ही कुछ रखा होता था। जो मरीज़ बच्चे आते थे उनको तोहफ़ा भी देते थे। खिलौने टॉफ़ीयां इत्यादि। मिशन में रहने वाले तलबा और ग़रीब अहमदी घरानों की बहुत मदद करते थे।

वहां के एक मुबल्लिग़ सिलसिला लिखते हैं कि आपके पास यदि कोई मरीज़ नहीं होता था तो उन्हें किसी ख़ादिम या नासिर की शिक्षा और तर्बीयत में व्यस्त पाया। यह नहीं कि यदि मरीज़ नहीं है तो बैठे रहे। किसी न किसी जमाअती काम में अपने आपको व्यस्त रखते थे। इस सिलसिले में कभी मलफ़ूज़ात या ख़ुत्बा जुमा का फ्रैंच अनुवाद कर रहे होते थे और जमाअत के लोगों को फिर उसकी फ़ोटो कापीयां करके भेजते थे। हर वक़त आप इन्सानियत की ख़िदमत के लिए तैयार रहते थे। बीमारों को स्वयं ज़ाती तौर पर दवाइयां ख़रीद कर देते और कभी ग़रीब लोगों को और कभी किसी को घरेलू ज़रूरीयात की वस्तुएं जैसे चावल, तेल इत्यादि वे भी मुहय्या फ़र्मा देते। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा है सलमा बेग़म साहिबा पत्नी डाक्टर राजा नज़ीर अहमद ज़फ़र साहिब जो 24 जनवरी को 85 साल की आयु में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

आप के पिता राजा फ़ज़ल दाद ख़ान साहब अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अपने ख़ानदान के पहले अहमदी थे। उनके लिखने वालों ने, उनके बच्चों ने ही उनके बारे में लिखा है कि आपकी नमाज़ों की तवालत तो उदाहरण के तौर पर पूरे ख़ानदान में मशहूर थी। निहायत ख़ुश अख़लाक़, ख़ुश-मिज़ाज, ख़िदमतगुज़ार, सयंमी, बावफ़ा, हिम्मत वाली, उच्च बुद्धि की मालिक, साहिब हिक्मत, वसीअ हौसले की मालिक, बा किरदार और पुर वक्कार, बहुत दुआ करने वाली, निहायत साबिर और शाकिर और ख़ुदा पर भरोसा रखने वाली महिला थीं। मरहूमा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में दो बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से रहम और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए।

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

अगला जनाज़ा आदरणीया किशोर तनवीर अरशद साहिबा पत्नी अब्दुल बाक़ी अरशद साहिब चेयरमैन शिर्कतुल इस्लामिया यू.के का है जो 27 फरवरी को 87 साल की आयु में वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

मरहूमा ने बहुत सब्र और हौसले के साथ अपनी बीमारी और बुढ़ापे में विभिन्न रोगों का मुक़ाबला किया और ख़ुदा तआला की इच्छा पर राज़ी रहते हुए अपने प्यारे रब के हुज़ूर हाज़िर हो गईं। पीछे रहने वालों में दो बेटे और दो बेटियां हैं और इसी तरह पोते और पोतीया और नवासे, नवासीयाँ यादगार छोड़े हैं। आप के एक दामाद नसीरुद्दीन साहिब इस वक़्त नायब अमीर यू.के की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। एक बेटा नबील अरशद है इस को भी हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह राबा के वक़्त में भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और मैंने भी जब भी किसी ख़िदमत के लिए उनको बुलाया तुरन्त हाज़िर हो जाते हैं। उन्होंने बच्चों की अच्छी तर्बीयत की है। आप बेशुमार ख़ूबीयों की मालिक थीं। बेहद सफाई पसंद थीं। सलीक़ा शआर थीं। एक फ़िदाई मुख़लिस और नेक महिला थीं। नमाज़ रोज़ा की पाबंद और चंदा अदा करने में बहुत जल्दी करतीं। हमेशा सदक़ा ख़ैरात दिल खोल कर करतीं। अरशद बाक़ी साहिब लिखते हैं कि उनका एक लम्बा समय लंदन में क़ियाम रहा इस मध्य 1984 ई. में हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह राबे रहमहुल्ला तआला की लंदन हिज्रत के बाद मेरे साथ जमाअती कामों में बहुत तआवुन करती रहें और हमेशा जमाअत की ख़िदमत को प्राथमिकता दी। हर लिहाज़ से अपने घर को एक पुरस्कून और जन्नत नज़ीर बनाए रखा। ख़लीफ़-तुल मसीह रहमहुल्ला तआला फ़रमाया करते थे कि सुकून के लिहाज़ से यह घर मेरा पसंदीदा है। उनकी बेटी कहती हैं कि हर हालत में ख़ुदा का शुक्र अदा करती थीं। दुख और सुख दोनों हालतों में क़ज़ा क़दर को ख़ुशी से क़बूल किया और ज़बान पर कभी कोई शिकवा न आने देती थीं। सऊदी अरब में भी उनका क़ियाम रहा। वहां भी जो अहमदी लोग हज या उमरे करने के लिए जाते थे उनकी बहुत ख़िदमत की तौफ़ीक़ उन्होंने पाई। अल्लाह तआला मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला जनाज़ा अब्दुर्रहमान हुसैन मुहम्मद ख़ैर साहिब आफ़ सूडान का है। 24 दिसंबर को उनकी 56 वर्ष की आयु में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

जमाअत अहमदिया से परिचय से पूर्व यह किसी भी इस्लामी फ़िरक़े में शामिल नहीं थे बल्कि उन्हें कुछ अक़ायद मसलन नासिख़-ओ-मंसूख़ और जिन इत्यादि के बारे में संदेह था। उनके बड़े भाई उस्मान हुसैन साहिब सऊदी अरब में काम करते थे। वहां उनका परिचय जमाअत से हुआ तो उन्होंने मरहूम अब्दुर्रहमान साहिब से इस का वर्णन क्या। यह 2007 ई. की बात है। अपने भाई से अहमदियत के बारे में सुना तो अब्दुर्रहमान साहिब एम.टी.ए देखने के लिए बेक़रार हो गए। उस वक़्त उनके इलाक़े में एम.टी.ए के प्रसारण कुछ मुश्किल से होते थे जिसके लिए उन्होंने अत्यधिक डिश एंटीने बदले, काफ़ी पैसा ख़र्च किया, आख़िर उन्हें एम.टी.ए मिल गया। फिर तो उनकी यह दिनचर्या थी कि काम से वापिस आने के बाद अक्सर वक़्त एम.टी.ए देखने में गुज़ारते। अंततः इतमीनान क़लब पर 2010 ई. में उनको बैअत की तौफ़ीक़ मिली। बैअत के बाद उन्होंने अपने समस्त रिश्तेदारों और दोस्तों को तब्लीग़ की। मरहूम की नेक सिफ़ात में आजिज़ी,इनकिसारी,मेहमान-नवाज़ी, गरीबों का ख्याल और हुस्न मुआमला नुमायां थीं 2013 ई. ने सूडान में जमाअत के क़ियाम में उन्हें नुमायां किरदार अदा करने की तौफ़ीक़ मिली और इस सिलसिला में बे दरेग़ माली क़ुर्बानी भी उन्होंने की। मरहूम बहुत से ग़रीब लोगों को जमाअत की माली मदद भी किया करते थे। सूडान के एक इलाक़े में आबाद एक बहुत ही ग़रीब क़बीले के अहमदी जब अहल इलाक़ा की ओर से ज़ुलम का निशाना बने तो मरहूम ने दिल खोल कर उनकी माली सहायता की और उनकी ज़रूरतों का ख़्याल रखा। और लोगों का भी ख़्याल रखते थे। हर जुमा को अपनी गाड़ी पर मुख़्तलिफ़ स्थानों से अहमदियों को नमाज़ सैंटर ले कर आते और जुमा की नमाज़ के बाद उन्हें वापिस घर पहुंचाते थे। ग़ैर अज़ जमाअत अहबाब भी उनके अख़लाक़ की तारीफ़ करते हैं। चंदाजात में बहुत बाक़ायदा और दिल खोल कर ख़र्च करने वाले थे। सूडान की पहली मजलिस-ए-आमला में भी उनको काम करने की तौफ़ीक़ मिली और इस ज़िम्मेदारी को आख़िर वक़्त तक निभाते रहे। मरहूम के पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा दो बेटे और दो बेटियां हैं। अल्लाह तआला उनका भी जमाअत और ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ मज़बूत करे और मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

जैसा कि मैंने कहा नमाज़ के बाद में नमाज़ जनाज़ा अदा करूँगा।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

लोग कहते हैं पर्दे का हुक्म है पहले मैं इस हुक्म को समझूंगी फिर अनुकरण करूँगी। इन लोगों को कैसे समझाना चाहिए?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया उन्हें कहना चाहिए कि समझो, परन्तु समझने के लिए अपना ज़हन ख़ाली करो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : मर्दों का विश्वास न करो यह इस तरह है कि किसी कुत्ते के आगे रोटी डाल दो और उसे कहो कि न खाए। जब तुम बे पर्दा हो तो मर्दों की क्या गारंटी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि तुम कहते हो कि पर्दा नहीं होना चाहिए। चलो मैं मान लेता हूँ परन्तु क्या तुम इस बात की गारंटी दे सकते हो के पुरुष ग़लत नज़र से नहीं देखेगा? क्या तुम गारंटी दे सकती हो? इस पर विद्यार्थी ने कहा "नहीं" हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि पर्दे से इज़्ज़त और सम्मान क़ायम होता है। मैंने उमूमन देखा है कि लोग पर्दे वाली औरतों की इज़्ज़त करते हैं। इसी लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया اَلْحَيَاءُ مِنَ الْاِيْمَان अर्थात हया ईमान का हिस्सा है और औरत की हया यही है कि वह अपनी इज़्ज़त को महफ़ूज़ रखे। इस से पहले कि उस पर आरोप लगें, उस पर उंगलियां उठें, वह अपना सम्मान क़ायम रखे और बिना कारण के लड़कों से दोस्तीयाँ न करे। ठीक है यूनीवर्सिटी में पढ़ते हैं, रिसर्च करते हैं वहां लड़कों से बात भी करनी पड़ती है, परन्तु उसी माहौल में रह कर सम्मान से बात करें और उस माहौल से निकल कर टुक शाप में रस्टोरेंट्स में मिलना और रिसर्च के अतिरिक्त बातें करना किसी तरह उचित नहीं । इस्लाम इसी लिए कहता है कि तुम सम्मान से बात करो, ताकि मर्दों को पता चल जाए कि मैं उस से फ्री हो कर कोई ग़लत काम नहीं करवा सकता। असल चीज़ जो इस्लाम कहता है वह भावनाओ का कंट्रोल है। इस का मर्दों को भी हुक्म है, औरतों को भी हुक्म है। परन्तु महिलाए कमज़ोर होती हैं ओर कई दफ़ा मर्दों की चिकनी चुपड़ी बातों में आ जाती हैं, इस लिए उनसे कहा जाता है कि अपना एक बैरियर क़ायम करो और बैरियर के लिए ज़ाहिरी प्रकटन हिजाब और पर्दा है।

एक और विद्यार्थी ने प्रश्न किया : हुज़ूर! इतनी देर हो गई है आप हिमबर्ग तशरीफ़ नहीं लाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : क्या वहां की महिलाए सौ प्रतिशत पर्दा करने लग गई हैं। जब अवसर होगा तो ज़रूर आएँगे। कुछ लोग पर्दे के मुआमले में Extreme हद तक जाते हैं । मैंने आगे भी एक उदाहरण दी थी कि एक तस्वीर आई थी कि कार पर शटल काक बुर्क़ा चढ़ाया हुआ है और लिखा है तालिबान ने औरतों को कार ड्राइविंग की इजाज़त दी है। इस्लाम मियाना रवी (बीच के मार्ग) का धर्म है । मध्य में रहो।

एक विद्यार्थी ने प्रश्न किया : यदि याजूज माजूज से मुराद अमरीका और रूस हैं तो उनके मध्य जो नफ़रतें हैं उसकी क्या बुनियाद है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यदि वह इस्लाम को बर्बाद करने का प्रयास कर रहे हैं तो वह ही हैं। प्रत्येक वह ताक़त जो इस्लाम को ख़त्म करना चाहती है वह याजूज माजूज है।

एक और लजना की मेंबर ने प्रश्न किया : मेरी प्रोफ़ैसर कहती है कि हदीस, के 72 फ़िरक़े ग़लत होंगे एक सही है। यह हदीस ज़ईफ़ (कमज़ोर) है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : एक हदीस यदि सहाह सित्ता में नहीं भी आई और वह हदीस पूरी हो गई तो वह ज़ईफ़ नहीं है। सुन्नीयों में 35-34 फ़िरक़े हैं, इतने ही शीयों में भी हैं, ठीक है उनकी आगे भी तक़सीम हो गई है। लोग इस को मानते हैं। पिछले दिनों किसी ने मुझे लतीफ़ा सुनाया, कि एक आदमी ख़ुदकुशी करने के लिए दरिया में छलांग लगाने लगता है

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

तो दूसरा आदमी उसे बचा लेता है। बचाने वाला आदमी उस से पूछता है कि तुम किस फ़िर्क़ा से हो, वह बताता है, वह फिर पूछता है उसकी किस शाख़ से हो, वह बताता है तो दोनों एक ही फ़िरक़े की शाख़ से सम्बन्ध रखते हैं। उस के बाद वह मज़ीद पूछता है कि तुम अमुक मस्जिद में जाते हो या दूसरी मस्जिद। वह दूसरी मस्जिद में जाता था तो बचाने वाले ने उसे धक्का दे दिया कि तुम काफ़िर हो। फ़िरक़े गिनना उन का काम है जो कहते हैं कि नहीं हैं, हम तो मानते हैं कि ये फ़िरक़े हैं। लोग कहते हैं चांद, सूरज ग्रहण की हदीस ज़ईफ़ है। परन्तु जब साबित हो गई तो ज़ईफ़ नहीं। कोई एक जमाअत का नाम ले दें जो सारी संसार में एक लीडर के तहत अपने आपको जमाअत कहती हो। जमाअतुल वाहेद कहती है परन्तु वह एक मुल्क में है। परन्तु केवल जमाअत अहमदिया है कि कहीं चले जाओ। अफ़्रीक़ा में, यूरोप में, फ़राईस्ट में, आस्ट्रेलिया में, साउथ अमरीका में, जमाअत एक ही है, बाक़ी नहीं मानते तो न मानें। तुम्हारा काम तब्लीग़ करना है संदेश पहुँचाओ, हिदायत देना अल्लाह का काम है। उन्हों ने मज़ीद कहा कि जमाअत किस तरह चैक करती है कि यह हदीस ठीक है या नहीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें हिदायत के लिए तीन माध्यम क़ुरआन, हदीस और सुन्नत बताए हैं। वे हदीसें जो क़ुरआन और सुन्नत के मुनाफ़ी (विपरीत) हैं वे ग़लत हैं। हदीसें बाद में जमा हुईं। वे हदीसें जो क़ुरआन के विरुद्ध न हों वे सही हैं। छः हदीसों की किताबें सहा सित्ता जो हैं वह बहर हाल हैं।

एक और विद्यार्थी ने प्रश्न किया : इस्लाम ने पुरुष को दूसरी, तीसरी और चौथी शादी की इजाज़त दी है। कुछ मरद छुप कर दूसरी शादी करते हैं कई वर्ष बाद दूसरी शादी का पता चलता है तो क्या ऐसी शादी को भी सुन्नत का नाम दिया जा सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह हुक्म जंग की सूरत में था या ऐसी सूरत में कि महिलाए ज़्यादा हों। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुरुष की दो, तीन ज़रूरीयात बताई हैं। जिसके कारण से शादी जायज़ है, परन्तु साथ फ़रमाया कि तुम इन्साफ़ करो और सोसाइटी में इस का ऐलान करो। यदि कोई छुप कर शादी करता है तो ग़लत करता है। परन्तु इस शादी में यदि कोई पुरुष गुनाहगार है तो महिलाए भी ग्रस्त हैं। यदि औरत को पता है कि यह पहले से शादी शुदा है और वह इस से सम्बन्ध क़ायम करके शादी करती है तो वह भी उतनी ही गुनाहगार है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रिश्ता पर रिश्ता न भेजो। औरत, औरत पर अत्याचार न करे । और यह अत्याचार है औरत पर कि उस के पति को बहला फुसला कर सब्ज़-बाग़ दिखा कर राम कर लेती है। पुरुष दूसरी शादी औलाद की ख़ातिर और दीनी ज़रूरीयात के लिए कर सकता है। मगर पहले अफैयर चलाए फिर शादियां करे यह ग़लत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस का सख़्ती से खंडन फ़रमाया है। इस्लाम इसकी नफ़ी करता है। जहां अल्लाह तआला इजाज़त देता है वहां यह भी फ़रमाता है कि सारों से इन्साफ़ भी करो और इन्साफ़ का तक़ाज़ा यह है कि बराबर का व्यवहार करो। उनके हुक़ूक़ भी अदा करो। यह नहीं कि पहली बीवी से तीन बच्चे हैं तो दूसरी बीवी कर ली और पहली की ख़बर ही नहीं।

इस पर प्रश्न करने वाले विद्यार्थी ने पूछा : इस में पहली बीवी की रजामंदी किस हद तक है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : इन्साफ़ करो। बराबर का व्यवहार करो। पहली बीवी को बताना ज़रूरी है। इस से इजाज़त लेने का नहीं लिखा हुआ।

विद्यार्थीयों की यह क्लास आठ बज कर 45 मिनट पर ख़त्म हुई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

समारोह

साढ़े नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में पधारे और प्रोग्राम के अनुसार आमीन के समारोह का आरम्भ हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निमंलिखित 26 बच्चों और बच्चीयों से क़ुरआन-ए-करीम की एक एक आयत सुनी और अंत में आमीन करवाई।

निमंलिखित ख़ुशनसीब बच्चे और बच्चीयां आमीन की इस समारोह में शामिल हुए।

असाम चौधरी, मोनिस अहमद, लबीद अहमद, फ़ारान ख़्वाजा, सफ़ीर आलिम सोहल, मुफ़ल्लेह रौहान ख़ालिद, इंतिसार अहमद, शाहज़ेब क़ुरैशी, नग़मान अहमद मुज़फ़्फ़र, तमसील अहमद अर्सिलान, क़वीम अहमद काशिफ़, लबीद अहमद, असद इमरान मिर्ज़ा, अतहर अहमद, शहरयार मलिक, एहसान अहमद ताहिर

प्रिय मारिया हफ़ीज़। प्रिय अरुसा शाह, अम्तुल मंसूर नायला, प्रिय अलीशा अहमद, प्रिय नमूद-ए-सह्र राना, प्रिय सोफिया नाज़, प्रिय शमायज़ा ख़ान, प्रिय शाज़ीया सईद बाजवा, प्रिय आयशा अहमद, प्रिय मीशाज़का

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मगरिब, ईशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

31 मई 2015 ई (दिनांक इतवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मर्कज़ लंदन और दुनिया-भर की विभिन्न जमाअतों से प्राप्त होने वाली डाक, पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं।

जर्मनी की जमाअतों से भी प्रतिदिन जमाअत के लोग पुरुषों, महिलाओं की ओर से सैंकड़ों की संख्या में पत्र प्राप्त होते हैं। यह पत्र उर्दू, अंग्रेज़ी और जर्मन भाषा में होते हैं, जिनके साथ-साथ अनुवाद किए जाते हैं और यह सब पत्र भी प्रतिदिन हुज़ूर अनवर की सेवा में प्रस्तुत होते हैं और हुज़ूर अनवर इन सब पत्र और रिपोर्टस को मुलाहिज़ा फ़रमाने के बाद हिदायात से नवाज़ते हैं।

फ़ैमिली और इनफ़रादी मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिलीज़ और इन्फ़िरादी लोगों की मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज 41 फ़ैमिलीज़ के 163 लोग और 35 लोग ने इन्फ़िरादी तौर पर मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ जर्मनी की विभित्न 45 जमाअतों से आई थीं। आज भी कुछ जमाअतों से आने वाली फ़ैमिलीज़ बड़े लंबे फ़ासले तै करके अपने प्यारे आक़ा के दीदार के लिए आईं थीं।

कासल से आने वाली फ़ैमिलीज़ 200किलोमीटर, आकिन (Aachen) से आने वाली 267 किलोमीटर, DUSSELDORF से आने वाली फ़ैमिलीज़ 230 किलोमीटर, HANNOVER से आने वाले 350 किलोमीटर और म्यूनख़ से आने वाली फ़ैमिलीज़ 395 किलोमीटर की लम्बी दूरी तै कर के पहुंची थीं।

इन सभी फ़ैमिलीज़ ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चोंऔर बच्चीयों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम दो बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ ज़ुहर और अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

वाकफ़ीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर के साथ ख़ुसूसी क्लासिज़

आज वाकफ़ीन नौ बच्चों और वाकिफ़ात नौ बच्चीयों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ अलग-अलग क्लासिज़ के इनइक़ाद का प्रोग्राम था।

पहला प्रोग्राम वाकफ़ीन नौ बच्चों का था और उसका प्रबन्ध मस्जिद के मर्दाना हाल में किया गया था।

छः बजे हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रिहिल अज़ीज़ वाकफ़ीन नौ की क्लास में पधारे। इस क्लास में जर्मनी भर से चौदह से सोला वर्ष के लगभग अढ़ाई सौ वाकफ़ीन नो ने शमूलीयत का सौभाग्य प्राप्त किया।

इस क्लास का मौज़ू "क़ुरआन-ए-करीम के उलूम" रखा गया था।

प्रोग्राम का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। प्रिय मुइज़ अहमद राठौर ने सूरत अलक की पहली छः आयात की तिलावत की जिन का उर्दू अनुवाद प्रिय

जाज़िब अहमद अज़ीज़ ने किया।

इसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक हदीस और उस का उर्दू अनुवाद प्रिय माहिद हुसैन ने पढ़ कर सुनाया जिस के बाद प्रिय अर्सलान अहमद ख़ान ने मलफ़ूज़ात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम में से निमंलिखित इक़तिबास प्रस्तुत किया

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

"मैं इन मौलवियों को ग़लती पर जानता हूँ जो उलूम जदीदा की शिक्षा के मुख़ालिफ़ हैं। वे वास्तव में अपनी ग़लती और कमज़ोरी को छिपाने के लिए ऐसा करते हैं। उनके ज़हन में यह बात समाई हुई है कि उलूम जदीदा (वर्तमान आधुनिक ज्ञान) की तहक़ीक़ात इस्लाम से बदज़न और गुमराह कर देती है और वह यह क़रार दिए बैठे हैं कि मानों अक़ल और विज्ञान इस्लाम से बिल्कुल विपरीत चीज़ें हैं चूँकि स्वयं फ़लसफ़ा की कमज़ोरीयों को प्रकट करने की ताक़त नहीं रखते। इस लिए अपनी इस कमज़ोरी को छिपाने के लिए यह बात तराशते हैं कि उलूम-ए-जदीदा का पढ़ना ही जायज़ नहीं।"

"अत: आवश्यकता है कि आजकल दीन की सेवा और अल्लाह के नाम को ऊँचा करने के उद्देश्य से उलूम जदीदा प्राप्त करो और बड़े जद्द-ओ-जहद से प्राप्त करो। परन्तु मुझे यह भी तजुर्बा है जो बतौर इंतिबाह वर्णन कर देना चाहता हूँ कि जो लोग इन उलूम ही में यकतरफ़ा पड़ गए और ऐसे डूब और मुनहमिक हुए कि किसी अहल-ए-दिल और अहल-ए-ज़िक्र के पास बैठने का उनको मौक़ा न मिला और स्वयं अपने अंदर अल्लाह का नूर नहीं रखते थे वह उमूमन ठोकर खा गए और इस्लाम से दूर जा पड़े और बजाय इस के कि इन उलूम को इस्लाम के ताबे करते। उल्टा इस्लाम को उलूम के मातहत करने की बेसूद प्रयास कर के अपने ज़ोअम में धर्म की और क़ौमी ख़िदमात के मुतकफ़्फ़िल बन गए। परन्तु याद रखों कि यह काम वही कर सकता है अर्थात दीनी सेवा वही बजा ला सकता है जो आसमानी रोशनी अपने अंदर रखता हो।" (मलफ़ूज़ात भाग अव्वल, पृष्ठ 43)

इसके बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कविता "हे अज़ीज़ो!सुनो कि बे कुरआन* हक़ को मिलता नहीं कभी इंसां" प्रिय शाहिद नवाज़ ने तरन्नुम के साथ प्रस्तुत की इस नज़्म पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जर्मनी में पैदा हुए हो उर्दू यहां सीखी है। माशा अल्लाह जर्मनी में अच्छी आवाज़ें निकल रही हैं।

इसके बाद प्रिय सबीह अहमद सादिक़ ने "क़ुरआनी उलूम " के विषय पर निमंलिखित मज़मून प्रस्तुत किया

क़ुरआन-ए-करीम की वह्यी का आरंभ इन आयात से हुआ जिनका अनुवाद आप अभी सुन चुके हैं। यह सबसे पहली वह्यी थी जो हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई। इस तरह क़ुरआन-ए-करीम के नुज़ूल के साथ ही अल्लाह तआला ने यह ऐलान फ़र्मा दिया कि अब संसार में क़लम के माध्यम भी एक अज़ीम इन्क़िलाब पैदा होगा। इस लिए ऐसा हुआ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

"عَلَّمَ بِالْقَلَم के एक यह अर्थ भी हैं कि क़ुरआन-ए-करीम के माध्यम से भविष्य में सारे उलूम संसार में फैलेंगे। इस लिए आज जिस क़दर उलूम नज़र आते हैं यह सब क़ुरआन-ए-करीम के तुफ़ैल प्रकटन में आए हैं। क़ुरआन-ए-करीम अरबों में नाज़िल हुआ और अरब बिल्कुल जाहिल थे। उन्हें कुछ पता नहीं था कि इतिहास किस ज्ञान का नाम है या व्याकरण और गरेमर कौन से उलूम हैं या फ़िक़्हा और उसूल-ए-फ़िक़्हा किस चीज़ का नाम है। परन्तु जब क़ुरआन-ए-करीम पर ईमान लाने का सौभाग्य उनको प्राप्त हो गई तो क़ुरआन-ए-करीम के कारण से उन्हें इन समस्त उलूम की ओर मुतवज्जा होना पड़ा और इसी तरह ज्ञान तारीख़ की ईजाद अनुकरण में आया शब्दकोश भी क़ुरआन-ए-करीम की सेवा के लिए लिखी गई इसी तरह ज्ञान के अर्थ और इलम महिज़ क़ुरआन-ए-करीम के तुफ़ैल ईजाद हुए उद्देश्य यह उलूम जो संसार में एक के बाद एक प्रकट हुए केवल क़ुरआन-ए-करीम के तुफ़ैल और इसकी ताईद के लिए अल्लाह तआला ने प्रकट फ़रमाए हैं। यदि ये उलूम पैदा न होते तो क़ुरआन-ए-करीम की वास्तव में और इस के आला दर्जा की शान को लोग पूरी तरह समझने से क़ासिर रहते। यही हाल ज्ञान इक़तेसादीयात का है कि अल्लाह तआला ने उसे क़ुरआनी इक़तेसादीयात की तौज़ीह के लिए संसार में क़ायम किया। उद्देश्य क्या व्याकरण और क्या गरेमर और क्या तारीख़ और क्या अदब और क्या कलाम और क्या फ़िक़्हा, सब उलूम क़ुरआन-ए-करीम की सेवा के लिए निकले अन्यथा अरब तो केवल जाहिल थे।उन्हें इन उलूम की ओर ध्यान ही किस तरह पैदा हो सकता था। उनको ध्यान महिज़ इस कारण से हुआ कि उन्होंने क़ुरआन को माना और फिर क़ुरआन-ए-करीम से संसार को रोशनास कराने के लिए उन्हें इन उलूम की ईजाद या उनके फैलाने की ओर मुतवज्जा होना पड़ा। अब रही बाक़ी संसार अत: उसने भी क़ुरआन-ए-करीम से ही इन समस्त उलूम को सीखा है क्योंकि ये उलूम वे हैं जो अरबों ने ईजाद किए या ज़िंदा किए और फिर अरबों से बाक़ी संसार ने लिए।

उद्देश्य यूरोप के पास कोई एक चीज़ भी नहीं थी। उसने जो कुछ सीखा स्पेन के मुस्लमानों से सीखा और स्पेन ने जो कुछ सीखा शाम से सीखा और शाम वालों ने जो कुछ सीखा क़ुरआन से सीखा। अत: संसार के समस्त उलूम क़ुरआन से ही प्रकट हुए हैं और अब क़ियामत तक जिस क़दर क़लमें चलेंगी क़ुरआन-ए-करीम की सेवा और इस के वर्णन करदा उलूम की तरवीज के लिए ही चलेंगी। आज यूरोप में जितनी किताबें निकल रही हैं वे सबकी सब عَلَّمَ بِالْقَلَم की तसदीक़ कर रही और अल्लाह तआला की इस भविष्यवाणी को सच्चा साबित कर रही हैं कि क़लम के माध्यम से क़ुरआन-ए-करीम को फैलाया जाएगा।अरब प्रत्येक किस्म के उलूम से अज्ञान थे परन्तु क़ुरआन-ए-करीम पर ईमान लाने के बाद वह समस्त दुनिया के उस्ताद बन गए और फ़लसफ़ा जिस पर यूरोप को आज बहुत बड़ा नाज़ है इसके भी वही अविष्कारक हैं।

इस में कोई संदेह नहीं कि उलूम में हमेशा तरक़्क़ी होती रहती है और एक नसल के बाद दूसरी नसल प्रयास करती है कि उसका इलमी स्थान पहले से बुलंद हो जाए। परन्तु इसके अतिरिक्त बीज अपनी ज़ात में जो क़ीमत रखता है इससे कोई व्यक्ति इन्कार नहीं कर सकता। दरख़्त का फैलाओ चाहे किस क़दर बढ़ जाए बीज की एहमीयत से इन्कार नहीं किया जा सकता। इसी तरह उलूम चाहे किस क़दर तरक़्क़ी कर जाएं सहरा मुस्लमानों के सिर ही रहेगा। और मुस्लमानों का सिर क़ुरआन-ए-करीम के आगे झुका रहेगा क्योंकि यही वह किताब है जिसने ऐलान किया कि عَلَّمَ بِالْقَلَم । अब संसार को क़लम के माध्यम से उलूम सिखाने का समय आ गया है। अत: वास्तव में यही है कि संसार को समस्त उलूम क़ुरआन-ए-करीम ने ही सिखाए हैं । यदि क़ुरआन न आया होता तो संसार एक अंधकार की भांति होती। जहालत और बरबरीयत का नज़ारा प्रस्तुत कर रहा होता। यह क़ुरआन का एहसान है कि उसने संसार को अंधकार से निकाला और ज्ञान के मैदान में लाकर खड़ा दिया।

(तफ़सीर कबीर,भाग 9,सूरत अलक, पृष्ठ 271 से 274)

इस के बाद प्रिय अदनान कलीम ने "कुरआनी उलूम के उदाहरण" के विषय पर निमंलिखित निबन्ध प्रस्तुत किया।

प्यारे भाईओ !क़ुरआन करीम के अंदर बेशुमार ज्ञान हैं जिन पर क़ुरआन-ए-करीम बार-बार ग़ौर करने की ओर ध्यान दिलाता है। जैसे सूरह की आयात 22 से 25 में ख़ुदा तआला फ़रमाता है।" निसन्देह इस में ऐसी क़ौम के लिए जो ध्यान तथा चिन्तन करते हैं बहुत से निशान हैं।" इसी तरह फ़रमाया "निसन्देह इस में आलिमों के लिए बहुत से चिन्ह हैं" फिर फ़रमाया "निसन्देह इस में उन लोगों के लिए बहुत से निशान हैं जो बात सुनते हैं।" इसी तरह फ़रमाया"निसन्देह इस में अक़ल रखने वाले लोगों के लिए बहुत से निशान हैं।"

अब विनीत समय को ध्यान में रखते हुए से आपके सामने बेशुमार कुरआन के उलूम में से कुछ उदाहरण रखता है जिनके बारे में क़ुरआन हमें ग़ौर करने की हिदायत की है।

आज से चौदह सौ वर्ष पहले क़ुरआन-ए-करीम ने इस ब्रहमाण्ड के जन्म (जिसे बिग बैंग थियूरी कहा है) ब्रहमाण्ड के प्रत्येक क्षण फैलने इसी तरह गलैक्सीज़ ,

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 13 May 2021 Issue No.19

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

कामयाबी का ख़्याल छोड़ देता है उस की समरण शक्ति नष्ट होना शुरू हो जाती है। रुहानी हालतों में भी यही असल काम कर रहा है। जो कौमें गुनाह की माफ़ी की क़ायल नहीं वे गुनाह के दूर करने के लिए पूरी जद्द-ओ-जहद भी नहीं करतीं। जो फ़ित्रत की पाकीज़गी के क़ायल नहीं वे रुहानी ताक़तों को उनके कमाल तक पहुंचाने की तरफ़ भी मुतवज्जा नहीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी मायूसी की हालत को दूर करने की तरफ़ ख़ास तवज्जा फ़रमाई है। जैसे फ़रमाया कि لِكُلِّ دَاءٍ دَوَاءٌ اِلَّا الْمَوْتُ۔ हर रोग की सिवाए मौत के कि उसका आना ज़रूरी है दवा मौजूद है। या फ़रमाया مَنْ قَالَ هَلَكَ الْقَوْمُ فَهُوَ اَهْلَكَهُمْ जो कहे कि क़ौम हलाक हो गई है वही क़ौम को हलाक करने वाला है। क्योंकि वे क़ौम की उम्मीद को तोड़ कर उस को हलाकत के क़रीब कर देता है। अत: चाहीए कि इन्फ़िरादी तौर पर भी और क़ौमी तौर पर भी उम्मीद की रूह को तरक़्क़ी दी जाए। परन्तु यह बात दृष्टिगत रहे कि उम्मीद हो जिसके साथ क़ुव्वत-ए-अम्लीया तरक़्क़ी करती है न कि अमानी या बेहूदा ख़ाहिशात हों जो सस्ती और ग़फ़लत पैदा करती हैं। जैसे मुस्लमानों में बजाय कोशिश करके अपनी हालत दरुस्त करने के ख़्याल के यह ख़्याल ग़ालिब रहा है कि मसीह आ कर सब दुनिया की नेअमतें उनको दे देंगे। अमानी अर्थात केवल ख़ाहिशात जब मुस्तक़िल तौर पर दिल में बैठ जाएं तो वे भी नाउम्मीदी की तरह घातक हैं।"

(तफ़सीर कबीर, भाग 3 पृष्ठ 352 प्रकाशन क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

सितारों ,ग्रहों,दुमदार सितारों , सूरज और चांद इत्यादि के बारे में वह बातें बताईं जो नए अन्सन्धानों की रोशनी में इस ज़माने में हम समझ सके हैं और अभी कितनी ही ऐसी बातें होंगी जो अभी हम समझने के योग्य नहीं हो सके। ख़ुदा तआला अल-कुव्वेरत की आयत12 में यह भविष्यवाणी फ़रमाता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में एस्ट्रोनोमी के ज्ञान में बहुत उन्नति होंगी जैसा कि फ़रमाया"और जब आसमान की खाल उधेड़ दी जाएगी।"एस्ट्रोनोमी के विषय पर क़ुरआन-ए-करीम में सैंकड़ों आयतें उपस्थित हैं जो हमें और अधिक रिसर्च करने की दावत देती हैं। आसमान की तरह ज़मीन के बारे में भी क़ुरआन में बेशुमार आयतें उपस्थित हैं। ज़मीन की पैदाइश , ज़मीन में पहाड़ों का बनाया जाना, पानी और बादलों का निज़ाम , दरख़्तों का उगाना, जानवरों और परिंदों का पैदा करना। सारांक्ष ज़मीन के सम्बन्ध में जियालोजी के साथ साथ दूसरे कई मसला Hydrology, Oceanology, Zoology, Botany इत्यादि हासिल करने और उन पर ग़ौर करने के बारे में क़ुरआन-ए-करीम बार-बार ध्यान देता है।

इसी तरह ख़ुदा तआला सूरत की आयत 5 में यह भविष्यवाणी फ़रमाता है कि आख़री ज़माना में आरक्योलोजी के ज्ञान में भी बहुत उन्नति होंगी जैसा कि फ़रमाया "और जब क़ब्रें उखेड़ कर इधर उधर बिखेर दी जाएँगी।" इस के अतिरिक्त Egyptology के बारे में भी बेशुमार आयतें मौजूद हैं जो हमें History के बारे में तहक़ीक़ करने की हिदायत करती हैं।

क़ुरआन-ए-करीम में कई स्थानों पर इन्सान के जन्म और जन्म के स्तर के बारे में आयतें मौजूद हैं। और खासतौर Embryology के बारे में वह मालूमात दी गई हैं कि आज भी इस फ़ील्ड के बहुत से माहिरीन जो ख़ुदा तआला पर विश्वास नहीं रखते क़ुरआन-ए-करीम की इन्फ़ार्मेशन पर हैरान हैं कि 1500 सौ वर्ष पहले ये मालूमात किस तरह प्राप्त की गईं। ये आयतें निसन्देह हमें इस फ़ील्ड में भी और अधिक रिसर्च की दावत दी रही हैं।

विनीत इस कम समय में केवल कुछ एक उलूम का वर्णन कर सका है। जबकि क़ुरआन में समस्त रुहानी उलूम के साथ साथ दुनियावी उलूम की बुनियाद भी मौजूद है। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए कि हम ख़ुदा तआला की इन निशानियों पर ग़ौर तथा चिन्तन करने वाले हों।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

दिया था और नेकी के मार्ग इस तरह पर बन्द थे कि एक कम्मे शाह नामक व्यक्ति इस इच्छा में हाथ उठा उठा कर दुआएं मांगता था कि एक बार सही बुख़ारी के दर्शन हो जाएं और दुआ करता करता रो पड़ता था और ज़माना के हालात की कारण से निराश हो जाता था। आज गर्वनमेंट के क़दम की बरकत से वही सही बुख़ारी चार पाँच रुपए में मिल जाती है। और इस ज़माना में लोग इतने दूर जा पड़े थे कि एक मुसलमान ने जिसका नाम ख़ुदा बख़्श था, अपना नाम ख़ुदा सिंह रख लिया था। बल्कि इस गर्वनमेंट के हम पर इतने उपकार हैं कि यदि हम यहां से निकल जाएं तो न हमारा मक्का में गुज़ारा हो सकता है और न क़ुस्तुनतुनिया में, तो फिर किस तरह से हो सकता है कि हम उसके ख़िलाफ़ कोई ख़्याल अपने दिल में रखें। यदि हमारी क़ौम को ख़्याल है कि हम गर्वनमेंट के ख़िलाफ़ हैं या हमारा मज़हब ग़लत है तो उनको चाहिए कि वह एक मज्लिस क़ायम करें और इस में हमारी बातों को ठंडे दिल से सुनें ताकि उनकी तसल्ली हो और उन की ग़लत फहमियां दूर हों।

झूठो के मुंह से बदबू आती है और फ़िरासत वाला उसको पहचान जाता है। सच्चे के काम सादगी और एक रंग के होते हैं और ज़माना की अवस्था उसकी सहायक होती हैं।

ज़माना की ज़रूरत

आजकल देखना चाहिए कि लोग किस तरह सच्चे अक़ीदों से फिर गए हैं। 20 करोड़ किताब इस्लाम के ख़िलाफ़ प्रकाशित हुईं और कई लाख आदमी ईसाई हो गए हैं। हर एक बात के लिए एक सीमा होती है और अनावृष्टि के बाद जंगल के हैवान भी बारिश की आशा में आसमान की तरफ़ मुंह उठाते हैं। आज 1300 बर्ष की धूप और बारिश के रुकने के बाद आसमान से बारिश उतरी है। अब इस को कोई रोक नहीं सकता। बरसात का जब वक़्त आ गया है तो कौन है जो इस को बंद करे। यह ऐसा वक़्त है कि लोगों के दिल सच्चाई से बहुत ही दूर जा पड़े हैं। ऐसा कि ख़ुद ख़ुदा पर भी शक हो गया है

अल्लाह पर ईमान का महत्तव

हालाँकि समस्त कर्मों की तरफ़ हरकत सिर्फ ईमान से होती है। जैसे सम्मु-लफार (एक विष) को यदि कोई व्यक्ति तबाशीर(दवाई का नाम) समझ ले तो बिना किसी मतभेद के कई माशों तक खा जाएगा। यदि विश्वास रखता हो कि यह कत्ल करने वाला ज़हर है तो हरगिज़ उसको मुंह के क़रीब भी न लाएगा। हक़ीक़ी नेकी के लिए यह ज़रूरी है कि ख़ुदा के वजूद पर ईमान हो,क्योंकि मजाज़ी हुक्काम को यह मालूम नहीं कि कोई घर के अंदर क्या करता है और पर्दा के पीछे किसी का क्या कर्म है। और यद्यपि कोई ज़बान से नेकी को स्वीकार करे परन्तु अपने दिल के अंदर वह जो कुछ रखता है इसके लिए इस को हमारे पकड़ का ख़ौफ़ नहीं और दुनिया की हुकूमतों में से कोई ऐसी नहीं जिसका ख़ौफ़ इन्सान को रात में और दिन में, अंधेरे में और उजाले में, एकान्त में और भीड़ में, वीराने में और आबादी में, घर में और बाज़ार में हर हालत में एक जैसा हो। फिर आचरण के ठीक होने के लिए उस तरह की हस्ती पर ईमान लाना आवश्यक है। जो हर हालत और हर समय में उस के कर्मों और आचरणों और उस के हृदय के भेदों पर गवाह है। क्योंकि वास्तव में नेक वही है जिसका ज़ाहिर और भीतर एक है और जिसका दिल और बाहर एक है। वह ज़मीन पर फ़रिश्ता की तरह चलता है। नास्तिक ऐसी गर्वनमेंट के नीचे नहीं कि वह उत्तम आचरण को को पा सके। समस्त परिणाम ईमान से पैदा होते हैं अत: साँप के सुराख़ को पहचान कर कोई उंगली इस में नहीं डालता। जब हम जानते हैं कि एक मात्रा इस्ट्रकेन्या की क़तल करने वाली है, तो हमारा उसके क़ातिल होने पर ईमान है और इस ईमान का नतीजा यह है कि हम इस को मुंह नहीं लगाएँगे और मरने से बच जाऐंगे।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 253 से 260 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad